वर्ष 24 | अंक 12 | जुलाई, 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

अनोखी स्कूलें

तैरती स्कूल

बांग्लादेश में बाढ़ एक बड़ी समस्या है। इन परिस्थितियों में स्कूल चलाना मुश्किल हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चे शिक्षा से वंचित न रहें इसलिए वहाँ ऐसी स्कूलें बनाई गई जो नावों पर तैरती हैं! ये शिक्षण केन्द्र साल भर काम करते हैं। जब देश बाढ़ से प्रभावित नहीं होता है, तब भी ये स्कूलें नदी के किनारे खड़ी रह कर बच्चों को पढ़ाती हैं।

मोबाइल स्कूल

शिक्षा से वंचित रहने वाले बच्चों के लिए पाकिस्तान में बस में स्कूल प्रारम्भ की गई। बस आस–पड़ोस के क्षेत्रों में भ्रमण करती है, प्रत्येक दिन लगभग 160 छात्रों को दो–दो घंटे के लिए पढ़ाया जाता है। यह मोबाइल स्कूल लगभग पूरी तरह से जनता के सहयोग से संचालित होती है।

प्लेटफॉर्म स्कूल

भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म पर चलने वाली स्कूल गरीब बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों का एक अच्छा उदाहरण है। स्कूल अपने छात्रों की भोजन और चिकित्सा जरूरतों को भी पूरी करती है और बच्चों को नियमित स्कूलों में प्रवेश दिलाने के लिए तैयार करती है।

फ्री स्कूल

ब्रुकलिन फ्री स्कूल अद्‌भुत है। यहाँ कोई परीक्षा, गृहकार्य या ग्रेड नहीं हैं और कोई भी पाठ्यक्रम नहीं है। यदि छात्र खेलना चाहते हैं, इधर–उधर घूमना चाहते हैं या बस झपकी लेना चाहते हैं तो कोई प्रतिबंध नहीं है। साप्ताहिक बैठकों में बच्चे तय करते हैं कि स्कूल को कैसे संचालित करना चाहिए। शिक्षक केवल मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं।

कहाँ क्या?

आलेख

जे.आर.डी. टाटा	: तरुण कुमार दाधीच	— 11
अनोखा महाबलीपुरम	: मुग्धा पांडे	— 22
अब तुम मत रोना (पत्र)	: छाया अग्रवाल	— 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	— 34
झूले बड़े अलबेले	: किरण बाला	— 37
भारत में वाटर स्पोर्ट्स	: अनिल जायसवाल	— 38

कहानी

खुद न बचे पर बचा लिया	: रजनीकान्त शुक्ल	— 07
जीने का अधिकार	: प्रदीप कुमार शर्मा	— 09
राघव की सोच	: डॉ. चेतना उपाध्याय	— 13
भविष्य की नींव	: सुधा आदेश	— 15
जिम्मेदार कौन?	: अशोक 'अंजुम'	— 19
अब बस करो	: पूनम पांडे	— 23
लापरवाही का एहसास	: पवित्रा अग्रवाल	— 31
चीकू का खान–पान	: महेश कुमार केशरी	— 35
बारिश का मजा	: लक्ष्मी कनोड़िया	— 39
पौधारोपण	: सुनील कुमार माथुर	— 46

कविता-गीत

बच्चों का रेनी डे	: स्नेह लता	— 06
मैं सरिता हूँ	: गोविन्द भारद्वाज	— 10
बादल मेरा नाम	: दीनदयाल शर्मा	— 10
बादल भैया	: पवन पहाड़िया	— 10
पंख लगा दो मेरे	: आरती लोहनी	— 18
मनभावन परियाँ	: कर्नल प्रवीण त्रिपाठी	— 18
बरखा ऋतु	: डॉ. अलका अग्रवाल	— 30

विविधा

विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	— 14
चित्र बनाओ	: चाँद मोहम्मद घोसी	— 16
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	— 17
बूझो तो जानें	: मीरा सिंह 'मीरा'	— 33
दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	— 40
असम का राज्य पक्षी	: डॉ. कैलाश चन्द्र सैनी	— 47
चित्र कथा	: संकेत गोस्वामी	— 48

स्तम्भ

सम्पादक की पाती – 05, महाप्रज्ञ की कथाएँ – 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग – 08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 12, ओल्ड इज गोल्ड – 26, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 49,

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 12 जुलाई, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452 | सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651 | प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका शर्मा

अध्यक्ष | अविनाश नाहर महामन्त्री | भीखम सुराणा कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया

प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन

ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY
IDBI Bank BRANCH Rajsamand
A/c No. : 104104000046914
IFSC : IBKL0000104

UPI

RAZOR PAY
https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

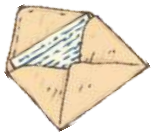

प्यारे बच्चो,

जिन्दगी में कई रंग होते हैं। दोस्ती, हँसी-मजाक, झगड़ा, रूठना-मनाना, ताने, प्रशंसा, उलाहना... और भी अनेक रंग! यही विविधता हमारी जिन्दगी को खूबसूरत बनाती है, यादगार बनाती है। लेकिन, कभी-कभी अपने साथ हुए व्यवहार को, घटनाओं को हम दिल में बिठा लेते हैं। झगड़े बड़ा रूप ले लेते हैं और नई समस्याओं को जन्म दे देते हैं।

ऐसा ही हुआ जब नीरव के सबसे अच्छे मित्र पंकज ने आज स्कूल में सबके सामने उसे स्वार्थी बता दिया और दोस्ती तोड़ने की बात कह दी। नीरव यह सुनकर अपने गुस्से को रोक नहीं पाया और पंकज को धोखेबाज कह कर धक्का मार दिया।

नीरव और पंकज की दोस्ती जग-जाहिर थी। दोनों के परिवार इस घटना से आहत हुए। स्कूल में उनकी क्लास-टीचर को जब यह बात पता चली तो वे भी चिन्तित हो गई। क्लास में उन्होंने दो बच्चों के झगड़े की एक कहानी सुनाई जिसमें छठी कक्षा में हुई लड़ाई ने उन्हें इतना दूर कर दिया था कि कॉलेज शिक्षा पूरी होने तक भी उन्होंने एक-दूसरे से बात तक नहीं की। उनकी शादी के बाद संयोग से उन्हें पता चला कि जिस बात को लेकर दोनों झगड़े थे, वह बात ही झूठी थी।

यह कहानी सुनाकर टीचर ने कहा- ''मुझे पता चला है कि कल नीरव और पंकज में झगड़ा हो गया है। मैं नीरव से जानना चाहती हूँ कि क्या उसे पता है कि पंकज ने उसे स्वार्थी क्यों कहा?'' नीरव ने इनकार में सिर हिला दिया।

टीचर ने पंकज से कारण पूछा तो वह बोला- ''मैम, इसने मेरे मित्र सोनू की साइकिल इसलिए तोड़ दी थी ताकि वह सिंगिंग कम्पीटिशन में भाग न ले सके और यह खुद कम्पीटिशन जीत सके।'' नीरव यह सुनकर आश्चर्यचकित था। उसने इस बात से साफ इनकार कर दिया।

बात-बात में दूसरे बच्चों से पता चला कि दो बाहरी लोगों ने सोनू की साइकिल चुराने की कोशिश की थी। नीरव ने उन्हें रोकने की कोशिश की थी तब चोर साइकिल को तोड़ कर भाग गए थे। असलियत पता चलने पर पंकज शर्मिन्दा था, सिर झुकाए वह मौन खड़ा रहा।

टीचर ने कहा- ''बच्चो, नीरव पर आरोप लगाने से पहले यदि पंकज उससे बात कर लेता और नीरव गुस्सा होने से पहले यदि पंकज से कारण पूछ लेता तो शायद यह मुसीबत नहीं खड़ी होती। हमें निर्णय पर पहुँचने से पहले थोड़ा रुक कर सोचना चाहिए।'' टीचर के इस प्रयास से नीरव और पंकज की दोस्ती टूटने से बच गई थी। दोनों जब गले मिल रहे थे तो दोनों की आँखों में आँसू थे।

बच्चो, हमें भी नीरव और पंकज की इस कहानी को दिल में बिठाना है और झगड़ों से बचने का प्रयास करना है।

आपका ही,
संचय

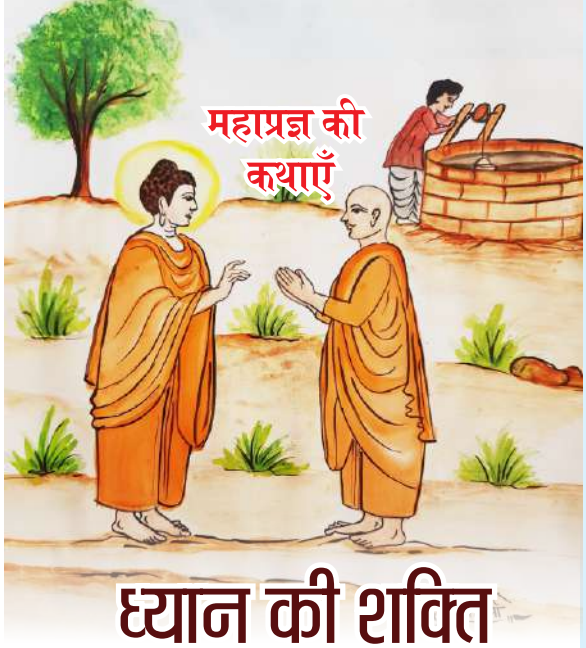

ध्यान की शक्ति

महात्मा बुद्ध विहार कर रहे थे। साथ में एक शिष्य था। शिष्य ने पूछा– ''भन्ते! ध्यान की शक्ति क्या है? मैं जानना चाहता हूँ।'' बुद्ध ने सुना, उत्तर नहीं दिया। मार्ग में एक कुआँ आया। एक यात्री आ रहा था। वह प्यासा था। उसने देखा कुएँ के पास एक बाल्टी पड़ी है, वह डोरी से बँधी है। उसने उस बाल्टी को कुएँ में डाला। डोर खींची। बाल्टी ऊपर आयी, पर उसमें पानी नहीं था। वह खाली थी। फिर उसे कुएँ में डाला। ऊपर खींचा, पर वह खाली ही ऊपर आयी। वह पानी नहीं पी सका। बाल्टी के पेंदे में छेद थे। जितना पानी भरता, वह ऊपर आते–आते खाली हो जाता।

बुद्ध आगे चले। कुछ ही दूरी पर दूसरा कुआँ दिखा। वहाँ भी डोर में बँधी बाल्टी पड़ी थी। एक प्यासा पथिक आया। बाल्टी से पानी खींचा। पानी पिया। प्यास बुझ गयी।

बुद्ध ने शिष्य से कहा– ''वत्स! तुम जानना चाहते थे कि ध्यान की शक्ति क्या है? ध्यान की शक्ति यह है कि जो ध्यान नहीं करता वह खाली रहता है, कभी नहीं भरता है। जो कुछ अन्दर जाता है, वह सारा का सारा निकल जाता है। जो ध्यान करता है, जितना अन्दर जाता है, उससे हजार गुना बढ़ता है। यह है ध्यान की शक्ति।''

पद्य कथा

बच्चों का रेनी डे

सूरज की गरमी से चिढ़कर
सागर को गुस्सा आया।
पानी उड़ा भाप बनकर के
बादल बन नभ पर छाया।।

नभ से बोला इस सूरज को
मुझको मजा चखाना है।
ऐसे ढक लूँगा इसको मैं
नहीं धरा पर न आना है।।

बोला गगन सुनो तुम भैया
धीर वीर कहलाते हो।
कभी न तुम तजते सीमा
फिर रक्षक बन जाते हो।।

करो माफ सूरज को भैया
अपने बादल से कह दो।
धरती मैया कितनी सुन्दर
प्यास उसकी शान्त कर दो।।

ठंडे मन से लगा सोचने
राय गगन की अच्छी है।
जिसमें भाव भलाई का हो
बात वही तो सच्ची है।।

बादल से हँसकर बोला तुम
उमड़ घुमड़ जल बरसाओ।
भीगें ताल, तलैया, पोखर
वृक्षों को भी हरषाओ।।

बच्चों का रेनी डे होगा
झूला झूलें गाना गाएँ।
बाग–बगीचे आँगन भीगें
धान खेत में लहराएँ।।

स्नेह लता
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

साहसी बच्चे

खुद न बचे पर बचा लिया

मिजोरम के मामित जिले के पश्चिम फायलेंग में सलेम बोर्डिग स्कूल हैनिस में पढ़ने वाले कुछ छात्र जरूरी सामान लेने के लिए बाजार गए हुए थे। उनके बाजार जाने के रास्ते में तेइरेइ नदी पड़ती थी। जिसे पार करके ही वे बाजार पहुँच सकते थे।

उस समय पहाड़ों से बर्फ पिघल कर आ रही थी और बारिश होने के कारण उस समय तेइरेइ नदी का जल स्तर बढ़ा हुआ था। पन्द्रह साल का लालरमदिनथारा और उसका साथी जोथानपुईया और साथ में अन्य कई मित्र बाजार जा रहे थे।

लालरमदिनथारा और उसके साथी जब नदी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने नदी के जल स्तर को बढ़ा हुआ पाया। पहाड़ी स्थान होने के कारण वहाँ जल का प्रवाह भी तेज था। सभी ने मिलकर सोचा क्या किया जाए? जाना जरूरी था इसलिए वापस लौटने का तो सवाल ही नहीं था। लालरमदिनथारा अच्छा तैराक था इसलिए वह आगे बढ़ा और बोला– ''दोस्तो, तुम चिन्ता न करो। मैं आगे जाता हूँ। तुम लोग मेरे पीछे–पीछे आ जाना।'' इतना कहते हुए वह नदी में उतर गया। अपने कौशल का प्रयोग करता हुआ वह नदी के दूसरे किनारे तक जा पहुँचा। अभी वह बाहर निकलने वाला था कि तभी उसे पीछे से अपने मित्र की सहायता के लिए पुकार सुनाई पड़ी। उसने पलटकर देखा तो उसका साथी जोथानपुईया मदद के लिए पुकार रहा था। उसे ज्यादा तैरना नहीं आता था और नदी के तेज पानी का बहाव उसे अपने साथ बहाकर ले जाने लगा था।

जैसे ही लालरमदिनथारा ने अपने मित्र को संकट में देखा तो वह तुरन्त पलट गया और अब वह तेजी से वापस जोथानपुईया की ओर तैरने लगा जो तेज बहाव से बचने के लिए पानी में हाथ पाँव मार रहा था। वह शीघ्र ही उसके पास पहुँच गया। अब लालरमदिनथारा ने जोथानपुईया को बचाने के लिए उसकी ओर हाथ बढ़ाया। मगर उससे पहले जोथानपुईया ने उसको कसकर पकड़ लिया। नतीजा

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

शरीर की सफाई

अपने शरीर, अपने घर और आस–पास की सफाई रखकर हम स्वयं अपने को व अन्य लोगों को स्वस्थ रख सकते हैं।

मुँह व दाँतों की सफाई

प्रतिदिन प्रातः उठते ही मुँह और दाँतों की सफाई करनी चाहिए। इसके लिए अच्छी गुणवत्ता वाले मंजन या पेस्ट और ब्रश का प्रयोग करना चाहिए। नीम अथवा बबूल की नरम दातुन से भी दाँत साफ किए जा सकते है।

मल–मूत्र त्यागना

उचित स्थान एवं उचित समय पर मल मूत्र त्यागने से गन्दगी नहीं फैलती है। मल–मूत्र के आवेग को रोकना भी नहीं चाहिए। स्वस्थ बालक दिन में एक या दो बार शौच–कार्य करता है।

स्नान

साफ बाल्टी में ताजा जल लेकर स्नान करना चाहिए। शरीर को दोनों हाथों से मल–मल कर नहाना चाहिए। नहाने के लिए किसी अच्छे साबुन का प्रयोग करना चाहिए। सप्ताह में एक दिन पूरे शरीर पर तेल की मालिश कर 15–20 मिनट धूप–सेवन करने के बाद नहाना चाहिए। स्नान के बाद रोएँदार, मुलायम तौलिए से रगड़कर शरीर को अच्छी तरह से पोंछना चाहिए।

नाखूनों की सफाई

अपने हाथ व पैरों के नाखूनों को बढ़ने न दें। उन्हें समय समय पर सावधानीपूर्वक नेलकटर से काट लेना चाहिये। बढ़े हुए नाखूनों में गन्दगी रहती है, जो भोजन करते समय शरीर के भीतर चली जाती है। इसलिए भोजन करने के पहले अपने हाथों को साबुन अथवा राख से रगड़कर साफ जल से धो लेना चाहिए।

वस्त्र

हमेशा साफ वस्त्र पहनने चाहिए। विद्यालय की पोशाक विद्यालय के समय पर ही पहनें। घर आने पर वस्त्र बदल लें। घर में आरामदायक वस्त्र पहनें। शरीर से चिपके हुए वस्त्र शारीरिक विकास में बाधक होते हैं। ऐसे वस्त्र पहनने से कार्य करने, उठने–बैठने, चलने, सोने में असुविधा होती है। वस्त्रों को सही स्थान पर समेटकर अथवा खूँटी आदि पर टाँगकर व्यवस्थित रखना चाहिए। अपने अन्तःवस्त्र प्रतिदिन स्वयं धोने चाहिए। (क्रमशः)

जीने का अधिकार

बरसात का दिन था। आसमान पर काले–काले भूरे बादल इधर से उधर तैर रहे थे। उन बादलों के नीचे आसमान में न जाने कहाँ से ढेर सारी रंग बिरंगी तितलियाँ अठखेलियाँ कर रही थी। कुछ तितलियाँ नीचे–नीचे उड़ रही थीं तो कुछ आसमान से बातें कर रही थी।

नीचे उड़ती तितलियों को अपने हाथ में लपकने के लिए मोलू उनके पीछे–पीछे तेजी से भाग रहा था। जैसे ही कोई तितली सामने आती। वह उसे अपनी मुट्ठी में झपट लेता। तितलियाँ उसकी मुट्ठी से निकलने का जी तोड़ प्रयास करती मगर सब व्यर्थ। मोलू ने दूसरे हाथ में भी कुछ तितलियाँ पकड़ रखी थी। तितलियों के झुंड के साथ मोलू को भागते देख टीटू भी उसके पीछे–पीछे दौड़ने लगा। जब उसने मोलू को तितलियाँ पकड़ते देखा तो उसे अच्छा नहीं लगा। बोल पड़ा– ''ये क्या कर रहे हो मोलू!'' ''तुम देखते नहीं टीटू मैं तितलियाँ पकड़ रहा हूँ।'' वह दौड़ते हुए बोला। ''आखिर क्यों पकड़ रहे हो तितलियों को। इन्होंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''अरे टीटू, इन्होंने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा है। बीनू कह रहा था कि तितलियों को पकड़कर जमीन में गाड़ देने के बाद जब उस पर बरसात का पानी गिरता है तब ये तितलियाँ पैसा बन जाती है। इन्हें मैं पकड़कर जमीन में गाड़ दूँगा। खूब सारा पैसा बन जायेगा। तब मैं ढेर सारी टॉफियाँ खरीदकर खाऊँगा। देखते नहीं, बरसात भी होने वाली है।''

''अरे बुद्धू, तुम बीनू की फिजूल बातों में आ गए! मोलू नोट छापने की मशीन होती है। किसी जीव को मारकर गाड़ने से रुपया नहीं बनता। क्यों इन बेचारी प्यारी–प्यारी तितलियों की जान लेने पर तुले हुए हो! जानते भी हो इन्हें मारने से तुम्हें पाप लगेगा!'' टीटू ने समझाया।

''तो क्या बीनू झूठ बोल रहा था?''

''एकदम झूठ, सरासर झूठ। वह बहुत बदमाश लड़का है। दूसरों को सताने में उसे बहुत मजा आता है ना। याद है, उस दिन स्कूल में मास्टर जी नैतिक शिक्षा में पढ़ा रहे थे कि कभी भी निर्दोष जीवों को सताना नहीं चाहिए। जैसे तुम्हें इस धरती पर रहने और जीने का अधिकार है वैसे उन्हें भी इस धरती पर रहने का अधिकार है।''

कुछ क्षण रुककर फिर टीटू ने मोलू को समझाया– ''अपने से कमजोर जीवों पर हमेशा दया दिखानी चाहिए। फर्ज करो यदि कोई तुम्हें बेवजह मारने पीटने लगे तो तुम्हें कैसा लगेगा? उन्हें भी यही महसूस होता है।'' ''मोलू, तुम्हें अगर कुछ हो जाय तो तुम्हारे मम्मी पापा कितने परेशान होते हैं? उसी प्रकार तुमने इन तितलियों को पकड़ रखा है, सोचो, उनके मम्मी पापा कितने दुःखी होंगे?''

मोलू की मुट्ठी में फँसी तितलियाँ अब तक दबकर बेहोश हो चुकी थी। वे उड़ने के बजाय जमीन पर भरभराकर गिर पड़ीं। यह देख मोलू एकदम से डर गया। टीटू की बातें सुनकर मोलू सन्न था। ''मुझे माफ कर दो टीटू! अब से कभी मैं ऐसी गलती नहीं करूँगा। अपने से छोटे सभी जीवों की रक्षा करूँगा।'' वह टीटू का हाथ पकड़कर सुबकने लगा था।

प्रदीप कुमार शर्मा
जमशेदपुर (झारखंड)

मैं सरिता हूँ

मैं सरिता हूँ लम्बी सी,
कल–कल बहती जाऊँ।
पानी–पानी रूप सजा,
नित मैं बढ़ती जाऊँ।

मेरे तट पर लगे भीड़,
सबको मैं नहलाऊँ।
भालू, चीता, बाघ, शेर,
सब की प्यास बुझाऊँ।

खेतों में अपने जल से,
फसलें खूब उगाऊँ।
टेढ़ी–मेढ़ी राहों पर,
नागिन–सी बल खाऊँ।

बरखा रानी जब बरसे,
फिर मैं वेग बढ़ाऊँ।
ज्यों–ज्यों पड़ती जब गर्मी,
धीरे से बढ़ पाऊँ।

सागर है मेरी मंजिल,
उसमें जा मिल जाऊँ।
नित आगे बढ़ना बच्चो,
सबक यही सिखलाऊँ।

जीवन मेरा संकट में,
कैसे इसे बचाऊँ?
कौन सुने फरियाद यहाँ,
दुखड़ा किसे सुनाऊँ?

गोविन्द भारद्वाज
अजमेर (राजस्थान)

बादल मेरा नाम

मैं हूँ जल का डाकिया,
बादल मेरा नाम।
चादर हरी ओढ़ाऊँ,
धरती मेरा धाम।।

जल ही मेरा देवता,
जल बरसाना काम।
जल जीवन हर जीव का,
जल बिन निकले राम।।

सूरज मेरा है पिता,
हवा है मेरी माँ।
अम्बर मेरा आसरा,
दौड़ूँ यहाँ–वहाँ।।

मयूर मुझको देखकर,
नाचे छतरी तान।
खुश होकर मैं बरसता,
फिर करता जलदान।।

नीरद, बदरा, वारिधर,
जलधर मेरे नाम।
मैं गगन का बादशाह,
मेटूँ सारे घाम।।

दीनदयाल शर्मा
हनुमानगढ़ (राजस्थान)

बादल भैया

क्या जाता पानी बरसाते,
बादल भैया, क्यों ना आते।

काहे तुम कंजूस बने हो,
पता नहीं है कहाँ तने हो।
आसमान पूरा ही नीला,
कौन जगह जा छिपे घने हो।
मोर थक गए गाते गाते,
बादल भैया, क्यों ना आते।

चिड़ियाँ थक गई नहा रेत में,
दादाजी तक रहे खेत में।
क्या तुमको माँ नहीं जगाती,
या डूबी है लिए हेत में।
काहे को तुम घर पर जाते,
बादल भैया, क्यों ना आते।

गैया को हरियाली भाती,
माँ थोड़े पानी से नहाती।
लोटा भर जल दे तुलसी को,
दादी भी ना व्यर्थ बहाती।
जल बचाना यही समझाते,
बादल भैया, क्यों ना आते।

हमें रेत के घर गढ़ना है,
नाव तिरा उसमें चढ़ना है।
छुट्टियाँ हो गई स्कूल की,
अब घर बैठे ही पढ़ना है।
इसीलिए सब तुम्हें बुलाते
बादल भैया क्यों ना आते।

पवन पहाड़िया
डेह नागौर (राजस्थान)

उद्योग जगत के शिरोमणि

जेआर डी टाटा

हमारे देश में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है जिनके जीवन से हमें सदैव प्रेरणा मिलती रहती है। इन महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से देश का नाम रोशन किया है। ऐसी ही विभूतियों की श्रृंखला में जेआरडी टाटा का नाम बड़े आदर और गर्व के साथ लिया जाता है।

जेआरडी टाटा का जन्म 29 जुलाई 1904 में फ्रांस की राजधानी पेरिस में हुआ। इनके पिता का नाम रतन जी दादाभाई टाटा एवं माता का नाम सुजैन ब्रियरे था। जेआरडी टाटा अपने माता–पिता की दूसरी सन्तान थे। माँ फ्रांसीसी होने के कारण इनका ज्यादातर बचपन फ्रांस में बीता और फ्रांसीसी भाषा इनकी पहली भाषा बनी। इसके बाद इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जॉन केनोन स्कूल, मुम्बई में हुई। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से आपने इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। 34 वर्ष की आयु में आपका विवाह थैली नामक कन्या के साथ सम्पन्न हुआ। फ्रांस में अनिवार्य सैन्य शिक्षा होने के कारण इन्होंने फ्रांस में रहकर एक वर्ष का अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया।

सादा जीवन उच्च विचार

मात्र 14 वर्ष की उम्र में आपने अपना व्यवसाय देखना शुरू कर दिया। ग्रेजुएशन करने के बाद आप पूरी तरह से अपने व्यवसाय के प्रति समर्पित हो गए। सादा जीवन और उच्च विचार आपके जीवन का प्रमुख सिद्धान्त रहा। व्यावसायिक उन्नयन के लिए आपने टाटा समूह में समर्पित कर्मयोगी के रूप में जीवन पर्यन्त अपनी महती भूमिका निभाई।

बात उस समय की है जब जेआरडी टाटा का कैरियर ऊँचाई पर था और वे एक दिन विमान में यात्रा कर रहे थे। सादे पेंट और कमीज में उनका व्यक्तित्व बहुत ही साधारण लग रहा था। विमान में उनकी मुलाकात प्रसिद्ध अभिनेता दिलीप कुमार से हुई। विमान के सहयात्री अभिनेता दिलीप कुमार को पहचान रहे थे और उन्हें प्रशंसा की नजर से देख रहे थे। उनके ठीक पास में बैठे टाटा इस बात से अनभिज्ञ यात्रा करते रहे। अन्त में उतरते समय जब दिलीप कुमार ने कहा कि मेरा नाम दिलीप कुमार है और आपका? इस पर टाटा ने जब अपना पूरा नाम बताया तो एयरलाइंस के मालिक की सादगी से दिलीप कुमार अत्यधिक प्रभावित हुए। उनके व्यवहार में अभिमान की जरा भी बू नहीं आ रही थी।

महिलाओं का सम्मान

एक बार टाटा समूह की ओर से पायलट की भर्ती के लिए विज्ञापन प्रकाशित हुआ। शर्त यह थी कि पुरुष ही आवेदन कर सकते हैं। यह पढ़कर एक महिला सुधा मूर्ति ने उन्हें पत्र लिखा कि महिला पायलट भी अपनी सेवाएँ दे सकती हैं। जेआरडी टाटा ने पत्र पढ़ते ही सुधा मूर्ति को बुलवाया और उन्हें पहली महिला पायलट के रूप में नियुक्त किया। इससे यह स्पष्ट होता है कि वे नई बात को स्वीकार करते थे और महिलाओं के प्रति सम्मान रखते थे।

नागरिक उड्डयन के जनक

जेआरडी टाटा ने 1929 में फ्रेंच नागरिकता त्याग दी और भारत की नागरिकता ले ली। इसी वर्ष आपने पायलट की परीक्षा पास पहले भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया। 1933 में आपने टाटा एयरलाइंस की शुरूआत की। कुछ समय बाद इस एयरलाइंस का नाम एयर इंडिया हो गया। इस कारण जेआरडी टाटा को "नागरिक उड्डयन का जनक" कहा जाता है।

कुशल प्रबंधक

जेआरडी टाटा एक बहुमुखी व्यक्तित्व होने के साथ साथ कुशल प्रबंधक थे। उनके पाँच दशक के कार्यकाल में उन्होंने अपने एक–एक साथी का इतना ध्यान रखा कि इस अवधि में कर्मचारियों ने कभी हड़ताल नहीं की। यह उनके कुशल प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है जो उदारता और मानवीयता से परिपूर्ण रही।

महान् व्यक्तित्व

अपने काम के प्रति वे बहुत ही समर्पित रहे। वे अपना काम खुद करते थे और छोटी छोटी बातों पर अपने साथियों से विचार विमर्श करते थे। वे कभी भी सफलता का सेहरा अपने सिर पर नहीं बाँधते थे बल्कि सफलता का श्रेय अपने साथियों को देते थे। उन्होंने कहा– "बिना गहरी सोच और कड़ी मेहनत के कुछ भी प्राप्त करने योग्य नहीं मिलता।"

उनके जीवन से हमें कई तरह की सीख मिलती है। उनका मानना था कि किसी भी काम को शुरू करने से पहले उसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए और पूर्ण निष्ठा के साथ सफलता की ओर बढ़ना चाहिए। उनकी एक और महत्त्वपूर्ण सीख यह रही कि व्यक्ति को अपने साथियों के साथ मिलकर लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए।

भारत रत्न से सम्मानित

भारतीय उद्योग जगत के शिखर पुरुष जेआरडी टाटा की मृत्यु 29 नवंबर 1993 को जेनेवा स्विट्जरलैंड में हुई। मृत्यु के बाद उन्हें फ्रांस की जन्मभूमि लेकसे कब्रिस्तान में दफनाया गया। जेआरडी टाटा को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से अलंकृत किया गया। 1992 में आपको देश के सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया। जेआरडी टाटा का उद्योग जगत में इतना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है कि आज देश के करोड़ों लोग टाटा समूह में रोजगार प्राप्त कर रहे हैं और करते रहेंगे।

ऐसे समाज सेवी, देशप्रेमी, महान् व्यक्तित्व को शत शत नमन करते हुए हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

तरुण कुमार दाधीच
उदयपुर (राजस्थान)

आओ पढ़ें : नई किताबें

दस बाल कहानियों की इस सजिल्द पुस्तक की सभी कहानियों में भाषा व भाव का अच्छा प्रवाह है। विविध विषयों की ये कहानियाँ मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद है। इनमें मानवीय गुणों के विकास की प्रबल सम्भावना है। आशा है बड़े चित्रों की यह सुन्दर पुस्तक बालमन को आकर्षित करेगी।

पुस्तक का नाम : दिव्या बन गई परी **लेखक :** डॉ.राजकुमार निजात **प्रकाशक :** हैरिटेज पब्लिकेशन, जयपुर
मूल्य : 200 रुपये **पृष्ठ :** 64 **संस्करण :** 2022

राघव की सोच

"कहाँ जा रहे हो अपनी पुस्तकें उठाकर?" माँ ने गुस्से में पूछा। राघव बोला– "दादाजी के कमरे में। वहीं बैठकर पढ़ूँगा।" "अरे, वे बीमार हैं। वहाँ बैठकर तुम्हारी पढ़ाई नहीं हो पाएगी। बोर्ड की परीक्षा है तुम्हारी। तुम अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। दादाजी का मैं ध्यान रख लूँगी।"

"नहीं माँ, उनका मन मेरे बिना नहीं लगता है। बार–बार आवाज देते हैं। मैं उनके पास बैठकर पढ़ूँगा, तो उनकी आँखों के सामने रहूँगा। उनको कोई तकलीफ होगी, तो बगैर उनके आवाज दिए ही मैं देख लूँगा। मेरी पढ़ाई भी हो जाएगी और दादाजी का अकेलापन भी दूर हो जाएगा।"

"पर बेटा, बोर्ड एक्जाम बेहद महत्त्वपूर्ण है, थोड़ा ध्यान दो।" "हाँ माँ, तभी तो सारी पुस्तकें दादाजी के कमरे में ही ले जा रहा हूँ। अपने कमरे से बार–बार वहाँ जाता हूँ, तो मेरा समय खराब होता है।" "तो बार–बार मत जाया करो न।"

"नहीं माँ। अगर मैं फेल हो गया, तो अगले साल पुनः बोर्ड परीक्षा में शामिल हो जाऊँगा। मगर मेरे दादाजी को कुछ हो गया, तो मैं कुछ नहीं कर पाऊँगा।" कहकर राघव दादाजी के कमरे में चला गया। माँ राघव के सोच के प्रति हर्षित थी।

डॉ. चेतना उपाध्याय
अजमेर (राजस्थान)

'खुद न बचे पर बचा लिया' पृष्ठ 7 का शेष....

यह हुआ कि बचाने की बजाय वह खुद अब जोथानपुईया के साथ–साथ नदी के तेज बहाव में बहने लगा।

लालारमदिनथारा अच्छा तैराक था वह बखूबी अपने मित्र को बचाकर किनारे तक ला सकता था मगर उसकी सारी कुशलता धरी की धरी रह गई। जोथानपुईया ने उसे कसकर पकड़ा हुआ था जिससे वह अपनी मर्जी से हिल भी नहीं सकता था। किनारे के साथ–साथ दौड़ते उसके बाकी दोस्त भी जोथानपुईया से लालारमदिनथारा को छोड़ देने के लिए कह रहे थे। मगर खुद बचने की जुगत में उसने लालरमदिनथारा को मजबूती से पकड़ रखा था।

उधर लालरमदिनथारा भी पूरा जोर लगा रहा था कि किसी तरह वह जोथानपुईया की पकड़ से जरा सा भी छूटे तो खुद भी बचे और उसे भी बचा ले। वह समझ चुका था कि उससे बहुत बड़ी भूल हो चुकी थी क्योंकि डूबने वाला तो हर सूरत में बचना चाहता है। उसके लिए तो वहाँ पर बहने वाला तिनका भी एक सहारे की तरह लगता था।

इस समय लालरमदिनथारा की स्थिति यह हो रही थी कि वह जोथानपुईया के चँगुल से निकलने के लिए छटपटा रहा था। इधर उसके बाकी दोस्त भी उसके साथ–साथ नदी के किनारे किनारे दौड़ते हुए चल रहे थे।

लालरमदिनथारा छूटा तो जरूर लेकिन वह नदी की तेज लहरों में घिर गया। उन लहरों ने उसका एक कौशल नहीं चलने दिया। जोथानपुईया को उसके दोस्तों ने कोशिश करके पानी से सुरक्षित बाहर निकाल लिया मगर लालरमदिनथारा तेज जानलेवा लहरों में फँसकर अपनी जान से हाथ धो बैठा। बाद में जब उसको निकाला गया तो उसका मृत शरीर ही हाथ आया। अपने मित्र की प्राण रक्षा करने के प्रयास में लालरमदिनथारा ने अपनी जान की बाजी लगा दी। मगर अफसोस यह रहा कि इस प्रयास में उसे खुद अपनी जान गँवानी पड़ी।

अपनी जान देकर भी अपने मित्र की प्राण रक्षा के साहसिक प्रयास के लिए लालरमदिनथारा का नाम वर्ष 2003 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुन लिया गया। 2004 के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर उसके माता पिता को देश के प्रधानमन्त्री जी ने यह राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

शृंगेरी, चिकमंगलूर (कर्नाटक) में विद्याशंकर मन्दिर के अन्दर 12 खम्बे हैं जिन पर विभिन्न राशियों के चिह्न बने हुए हैं और आश्चर्य यह कि प्रत्येक खम्बे पर सूर्य की रोशनी तब ही पड़ती है जब सूर्य उस विशेष राशि में होता है।

'जालसू नानक हॉल्ट' रेलवे स्टेशन शायद विश्व का ऐसा इकलौता स्टेशन होगा जिसका खर्चा सरकार नहीं बल्कि यहां के गांव वाले मिलकर उठाते हैं।

नागौर (राज.) ज़िले का यह स्टेशन सन 2005 में घाटे के कारण बंद हो गया पर ग्रामीणों द्वारा 11 दिनों के धरने के बाद इसे फिर से इस शर्त पर चालू कर दिया गया कि यहां का खर्चा स्वयं ग्रामवासी उठाएंगे और तब से 30,000 रुपयों की आय होने के बावजूद यह खर्चा स्थानीय निवासियों द्वारा ही उठाया जा रहा है।

पुणे, महाराष्ट्र के 82 वर्षीय श्रीधर चिल्लाल दुनिया भर में अपने लम्बे नाखूनों की वजह से अपने आप में एक मिसाल बने हुए हैं।

सन 1952 में अपने बायें हाथ को इन्होंने नाखूनों के हवाले ऐसा किया कि 17 नवम्बर, '14 के दिन जब इन नाखूनों को काटकर न्यूयॉर्क के 'बिलीव इट और नॉट' संग्रहालय में सुरक्षित किया गया, तब तक इनकी लम्बाई बढ़कर 907.6 सेमी. हो गई थी और यह उपलब्धि गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का हिस्सा भी बन चुकी थी।

रवि लायटू
बरेली (उत्तर प्रदेश)

दारा शिकोह मुग़ल साम्राज्य का अकेला ऐसा सदस्य था जिसको हिन्दू धर्म में भी उतनी ही आस्था थी जितनी अपने इस्लाम में।

तमाम हिन्दू धर्म ग्रंथों का गहन अध्ययन करने के साथ-साथ उसने पचास उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद किया था जिन्हें 'सिर-ए-अकबर' (सबसे बड़ा रहस्य) के नाम से जाना जाता है।

© gyashim@gmail.com / 08077554501

भविष्य की नींव

बादल गरजने के साथ झमाझम बरसात प्रारम्भ हो गई। बारिश को देखते ही आठ वर्षीय सुनयना ने झटपट अपना रेनकोट पहना तथा बाल्टी लेकर बाहर भागी। ''अरे कहाँ जा रही हो सुनयना?'' उसे ऐसा करते देखकर माँ दीपा ने आवाज लगाई। ''माँ अभी आई।'' तभी कालबेल बजी...दीपा अधूरी बात छोड़कर दरवाजा खोलने चली गई।

''सुनयना भींगना मत। बीमार पड़ जाओगी।'' कहते हुए दीपा दरवाजा खोलने चली गई। अमित आफिस से आये थे। वे दोनों अन्दर आये तो देखा, सुनयना ने बाल्टी बाहर रख दी है तथा स्वयं वहीं पास में खड़ी है। ''तुम बाहर खड़े होकर क्या कर रही हो? अन्दर आओ वरना भींग जाओगी।'' इस बार अमित ने किंचित क्रोध से कहा। ''पापा, बाल्टी में बरसात का पानी भर रही हूँ।'' ''पर क्यों बेटा?'' इस बार अमित का स्वर नरम पडा था।

''पापा, कल टी.वी. न्यूज में प्रधान मन्त्री जी कह रहे थे कि 'कैच द रेन' मतलब हमें बरसात का पानी एकत्र करना होगा। यही मेरी मैम भी कहती हैं कि हमें पानी बचाना है वरना एक दिन ऐसा आयेगा जब हममें से किसी को पानी नहीं मिलेगा।''

सुनयना की बात सुनकर अमित और दीपा ने एक दूसरे को देखा– ''इस पानी का तुम क्या करोगी?'' दीपा ने पूछा। ''माँ, इससे हम बरामदे में रखे गमलों के पौधों को पानी दे सकते हैं। घर में पोंछा लगा सकते हैं, कपड़े धो सकते हैं। बरतनों में लगी जूठन हटाकर बाद में साफ पानी से धोकर पानी की बचत कर सकते हैं।''

''यह सब तुम्हें किसने बताया?'' ''शेफाली मैम ने। मैम कहती हैं अगर आज हम पानी नहीं बचायेंगे तो आने वाले कुछ वर्षों में हमें पीने के लिए भी पानी नहीं मिलेगा।'' सुनयना ने फिर से कहा।

''समस्या बहुत बड़ी है बेटा, केवल तुम्हारे पानी बचाने से तो समस्या का हल नहीं होगा।'' दीपा ने कहा। ''माँ यही तो हमारी शेफाली मैम कहती है। सब ऐसे ही सोचने लगे तो कोई भी समस्या कभी नहीं सुलझेगी। पहले हमें स्वयं को बदलना होगा। हमें देखकर अन्य लोग भी बदलने लगेंगे। माँ–पापा अगर हम अभी से पानी बचाने की नहीं सोचेंगे, तो हम भी नहीं बचेंगे।'' कहते हुए सुनयना की आँखों में चिन्ता झलक रही थी।

''तुम्हारी शेफाली मैम ठीक कह रही हैं बेटा, आखिर किसी को पहल करनी ही होगी। किसी काम को जब हम करना प्रारम्भ करेंगे तभी तो दूसरे करेंगे।'' अमित ने उसकी बात का समर्थन किया।

बाल्टी को भरते देखकर सुनयना पुनः दौड़ी–दौड़ी गई तथा बाथरूम से दूसरी बाल्टी उठा लाई। सुनयना को बारिश में दूसरी बाल्टी रखते देखकर दीपा को याद आया कि लगभग तीन महीने पूर्व सुनयना ने स्कूल से आते ही चिन्तित स्वर में उससे कहा था– ''ममा, मैम कह रहीं थीं कि हमारी पृथ्वी

पर पानी की कमी होती जा रही है अगर हमने पानी बचाना शुरू नहीं किया तो एक समय ऐसा आएगा कि हमें पीने के लिए भी पानी नहीं मिलेगा।''

उसने सुनयना की बात को सुनकर भी अनसुना कर दिया था पर उस दिन के बाद सुनयना ब्रश करने या कुल्ला करने जाती तो अपना गिलास लेकर जाती। एक बार दीपा ने उससे पूछा तो उसने सहजता से कहा– ''ममा, इससे पानी कम खर्च होगा।'' कभी उससे या अमित से, यहाँ तक कि कामवाली लीला से नल अगर बेवजह खुला रह जाता और सुनयना देख लेती तो वह तुरन्त उन्हें टोक दिया करती थी। पानी के सदुपयोग के लिए आर.ओ. के पानी को इकट्ठा करने के लिए तो अमित ने पहले से ही सिंक के पीछे बने आँगन में एक टंकी बनवा दी थी जिसमें पानी एकत्रित हो जाता है। उस पानी का उपयोग पेड़–पौधों तथा घर के पोंछे के लिए किया जाता है लेकिन बरसात के पानी के संचय की तरफ उनका ध्यान ही नहीं गया था।

सच सुनयना को पानी भरते देखकर उसे लग रहा है कि– ''क्या हमें इस समस्या के बारे में सीरियसली विचार नहीं करना चाहिए? क्या हर घर में बरसात के पानी को बचाने के लिए प्रयत्न नहीं करने चाहिए? बच्चों के मन में सुनी या कहीं कोई भी बात इतनी गहरे पैठ जाती है कि वह उस पर अमल भी करना प्रारम्भ कर देते हैं जबकि हम बड़े हर बात को हल्के से लेते हैं। अगर हम बड़े अपनी ज़िम्मेदारी समझते, प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग न करते तो आज स्थिति ऐसी न होती।'' दीपा ने मन में सोचा।

अभी पन्द्रह दिन पहले वे सब गोवा भ्रमण कर लौटे हैं। दिल्ली से गोवा फ्लाइट से गए थे। दिल्ली एयरपोर्ट पर सुनयना ने सेन्सर वाला नल देखा था। तब से वह अपने पापा से कई बार कह चुकी है। पापा किचिन के सिंक तथा बाथरूम के वाशबेसिन में सेंसर वाला नल लगा लीजिये जिससे पानी बरबाद नहीं होगा। अब तक वह उसकी इस बात को टालते रहे थे।

विश्व जल दिवस पर जल की एक–एक बूँद को संचय करने के प्रधान मन्त्री के आग्रह ने नन्ही सुनयना को जल के संचय के प्रति जागरूक कर दिया। वह आज ही अमित से सेंसर वाले नल लगवाने के लिए कहेगी। इसके साथ ही बरसात के पानी का संचय करने के उपाय भी सोचने पड़ेंगे।

इसके साथ ही दीपा को सुनयना की शेफाली मैम पर भी गर्व हो आया। वह बच्चों की केवल शिक्षक ही नहीं, सच्ची मार्गदर्शक भी हैं। अगर सब स्कूलों में शेफाली जैसे ही शिक्षक हों तो हमारे बच्चे अच्छे नागरिक बनकर दूसरों के विचारों में परिवर्तन लाकर देश के भविष्य की नींव बन सकते हैं।

सुधा आदेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

चित्र बनाओ

अंडे की सहायता से मछली का चित्र बनाओ।

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

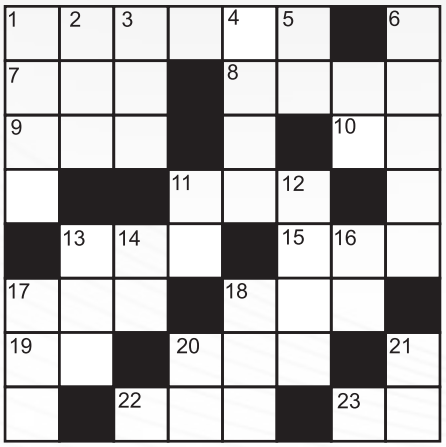

वर्ग पहेली

1	2	3		4	5	■	6
7			■	8			
9			■		■	10	
	■	■	11		12	■	
■	13	14		■	15	16	
17			■	18			■
19		■	20			■	21
	■	22			■	23	

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

ऊपर से नीचे

1. गणना, ग्रहण करना (4)
2. लड्डू, आनन्ददायक (3)
3. एक पैसे का आठवाँ हिस्सा, मुद्रा (3)
4. मोह माया में फँसा हुआ (4)
5. जान, साँस (2)
6. चमकीला (5)
11. दरवाजा, चौखट (2)
12. व्यायाम (4)
13. मुस्कुराहट, हल्की हँसी (3)
14. गधा (2)
16. पौधे का एक भाग, परिणाम (2)
17. साथ, सोहबत (3)
18. आभूषण (3)
20. रहस्य (2)
21. थोड़ा, जरा (2)

बाएँ से दाएँ

1. मनोरंजन (3,3)
7. डग, पग (3)
8. दोस्त, मित्र (4)
9. काष्ठ, काठ (3)
10. ठंडे प्रदेश का पशु (2)
11. दरवाजा खटखटाना (3)
13. बातूनी, वाचाल (3)
15. यात्रा (3)
17. मानव में अच्छे गुणों का विकास (3)
18. जहर, विष (3)
19. बन्दूक का अँग्रेजी नाम (2)
20. आराम (3)
22. अलंकृत करना, तैयार होना (3)
23. जिसमें दो का भाग पूरा–पूरा जाए (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

विचार करके कहते हैं कि तलवार न तो लोहे की कही जाएगी, न लोहार की। तलवार उस वीर की कही जाएगी जो वीरता से शत्रु के सिर पर मारकर उसके प्राणों का अन्त कर देता है।

लोहे की न लोहार की, रहिमन कही विचार।

जा हनि मारे सीस पै, ताही की तलवार ॥

पंख लगा दो मेरे

मिन्नी बोली चुनमुन से,
मुझको भी तो उड़ना है।
पंख लगा दो मेरे तुम,
सँग हवा के लड़ना है।।

कैसे लगाऊँ पर तुमको,
तुम ही मुझको बतला दो।
एक राह मैं बतलाती,
उसको तुम भी अपना लो।।

आशा के दीप जलाओ
अपनों की करो पहचान।
मेहनत तुम करती जाओ,
रोज भरो तुम नव उड़ान।।

इतना बड़ा गगन देखो,
उड़ो जहाँ तक जी चाहे।
मत देखो पीछे मुड़कर,
मिलेंगी तुम्हें भी राहें।।

एक दिन जहाँ देखेगा,
बेटी नहीं किसी से कम।
सबको ये दिखला देना,
जीतेंगे बस मिलकर हम।।

आरती लोहनी
मोहाली (पंजाब)

मनभावन परियाँ

मुझको प्यारी लगती नानी,
रोज सुनाती नई कहानी।
बच्चे–बूढ़े, राजा–रानी,
सबके किस्से सुने जुबानी।

राज कुमारी गुड्डे–गुड़िया,
राजकुँवर के किस्से बढ़िया।
परीलोक मुझको ले जातीं,
उनके किस्से मुझे सुनातीं।

सदा याद परियों की आये,
उनके किस्से मन को भाये।
रंग–बिरंगी नीली–पीली,
सब लगतीं मुझको सपनीली।

मन करता परियों सा बनना,
पंख लगा कर चाहूँ उड़ना।
मिलना होता बस सपनों में,
वो समझें मुझको अपनों में।

जगह–जगह वो मुझे घुमातीं,
नये–नये पकवान खिलातीं।
तभी जगातीं मुझको नानी,
उठो, खतम हो गई कहानी।

कर्नल प्रवीण त्रिपाठी
नोएडा (राजस्थान)

जिम्मेदार कौन ?

पात्र : श्री चड्ढा, श्रीमती महिमा चड्ढा, पुत्रः चैंडीसिंह, टीचर, राजेश, सुनिधि और पुत्र चन्दन।

दृश्य : 1

(पी.टी.एम. क्लास रूम का दृश्य। एक तरफ टीचर बैठे हैं, सामने मिस्टर चड्ढा, मिसेज महिमा चड्ढा और पुत्र चैंड़ी सिंह। दूसरी तरफ कुछ और पेरेंट्स अपने–अपने बच्चों के साथ बैठे हैं।)

टीचर : देखिए चड्ढा साहब, आपका बेटा चैंडी सिंह पढ़ाई में बहुत कमजोर है लेकिन शैतानियाँ में अव्वल है।

चड्ढा : अजी सर जी, यह पढ़ाई में वीक है तभी तो इतनी मोटी फीस देते हैं कि आप इसे पढ़ाई में ठीक करो हा हा हा हा!

टीचर : लेकिन चड्ढा साहब, ठीक तो उसे किया जाए जो बात सुनता और मानता हो, ये तो कुछ सुनता ही नहीं।

चड्ढा : देखिए बुरा मत मानिएगा सर जी, ये अगर नहीं सुनता तो इसका मतलब यह है कि आपको ठीक से सुनाना नहीं आता! हा हा हा!

टीचर : अरे! कमाल कर रहे हैं चड्ढा साहब, हम कोई बात बेहतर से बेहतर तरीके से बता ही सकते हैं। हमारे पास कोई जादू की छड़ी तो है नहीं कि घुमाई और बात बच्चे के दिमाग में घुस गई।

चड्ढा : अरे जादू की छड़ी आपके पास नहीं है सर जी, तो खरीद लीजिए। फाइनेंस हम कर देंगे। हा हा हा!

टीचर : चड्ढा साहब, जब आप इतना कर ही रहे हैं तो फिर ऐसी जादू की छड़ी जहाँ मिलती हो आप ही खरीद कर ला दीजिए।

महिमा : देखिए सर, यह छड़ी–वड़ी छोड़िए, मेरी आपसे एक रिक्वेस्ट है।

टीचर : जी, आदेश कीजिए!

महिमा : आप चाहे जैसे भी हो, इसे प्यार से समझाइए। कल ये शिकायत कर रहा था कि आपने इसको क्लास में इसलिए डाँट दिया कि इसने कल किसी मोंटू नाम के लड़के से झगड़ा कर लिया और उसे एक चाँटा मार दिया था बस...।

चड्ढा : अरे बच्चे नहीं लड़ेंगे–झगड़ेंगे सर जी तो क्या उनके दादा–दादी लड़ेंगे–झगड़ेंगे और एक चाँटा ही तो मारा था इसने, कोई मर तो नहीं गया था यह आपका मोंटू। हा हा हा!

टीचर : इसका मतलब यह क्लास में, स्कूल में कुछ भी करे और अनुशासन तोड़े हमें इससे कुछ नहीं कहना है।

चड्ढा : कहिए, लेकिन प्यार से। आपको बता दूँ पिछले स्कूल में चैंडी को उसके क्लास टीचर ने हाथ पर एक स्केल मार दिया था। दूसरे दिन उस टीचर को स्कूल छोड़ना पड़ गया। हा हा हा हा!

महिमा : वो तो इनका दिल इतना सॉफ्ट है कि उसके खिलाफ एफ.आई.आर. नहीं कराई।

टीचर : ओह बेचारा! वैसे चड्ढा साहब, क्या आपको पता है कि चैंडी सिंह यूनिट टेस्ट में सारे सब्जेक्ट में फेल हैं।

महिमा : तो इसका मतलब यह है कि स्कूल के टीचर अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभा रहे। इसमें चैंड़ी सिंह का क्या फॉल्ट है जी।

चड्ढा : सर जी, हम बच्चों की फीस देते हैं तब आपको सैलरी मिलती है। इसलिए आपकी जिम्मेदारी है कि आप बच्चे पर पूरा ध्यान दें!

टीचर : जी चड्ढा साहब, एकदम सही कहा आपने। वैसे एक सवाल करूँ?

चड्ढा : हाँ..हाँ जी बोलिए।

टीचर : आप और महिमा जी घर पर कितना ध्यान देते हैं चैंड़ी सिंह पर। कभी उसको लेकर बैठते हैं कि उसकी कॉपी–किताब चेक करें। उससे पूछें कि स्कूल में आज क्या–क्या हुआ?

चड्ढा : देखिए सर जी! अपना जो बिजनेस है उसमें साँस लेने की फुरसत नहीं मिलती। फिर हमें ही घर पर देखना है, पढ़ाना है तो फिर स्कूल में एडमिशन कराने की क्या जरूरत है। फिर तो हम घर पर सब देख ही लेंगे।

टीचर : तो इसका मतलब यह कि पेरेंट्स की कोई जिम्मेदारी नहीं।

महिमा : सर जी, पेरेंट्स का काम है बच्चे की जरूरतों को पूरा करना।

टीचर : यह तो बाहरी जरूरतें हैं। पढ़ाई की जरूरतें पूरी करने की जिम्मेदारी केवल टीचर की ही है क्या?

चड्ढा : अजी सर जी, बस आपसे यही रिक्वेस्ट है कि आप इसे क्लास में डाँटिए–फटकारिएगा नहीं। इससे यह डिप्रेशन में आ जाता है। कल आपके डाँटने के बाद यह घर पर इतना डिप्रेशन में था कि एक गिलास कोल्ड ड्रिंक तक इसने नहीं पिया।

टीचर : ओह! वैरी सैड!

दृश्य : 2

(टीचर अकेला कुछ कागजों को उलट–पुलट रहा है, तभी राजेश, सुनिधि एवं चन्दन का दरवाजे पर आना)

चन्दन : मे आई कम इन सर ?

टीचर : (उन्हें देखते हुए) अरे अरे आओ चन्दन बेटा! आइए राजेश जी, आइए बहन जी!

(चन्दन अन्दर आकर टीचर के पैर छूता है)

टीचर : जीते रहो बेटा, बैठिए राजेश जी, बहन जी बैठिए!

राजेश : नमस्कार सर और क्या हाल चाल हैं?

टीचर : सब कुछ बहुत अच्छा है राजेश जी! पिछले महीने मार्च में तो क्लोजिंग के कारण बहुत व्यस्तता रही होगी आपकी बैंक में...!

राजेश : जी सर, मार्च का महीना व्यस्तताओं वाला तो होता ही है लेकिन हम अपने काम को इंजॉय करने लगें तो फिर काम में इंटरेस्ट आने लगता है।

टीचर : जी, सच कहा आपने। ऊपर वाले ने जीवन में हमें जो जिम्मेदारियाँ दी हैं हम उन्हें जितनी प्रसन्नता के साथ निभाएँ, उतना ही जीवन सुखद रहेगा। रोने–धोने से तो काम का बोझ कम होने वाला नहीं है।

राजेश : जी सर सही कहा आपने और बताइए चन्दन बाबू की क्या प्रोग्रेस है?

टीचर : चन्दन बहुत होनहार बच्चा है राजेश जी।

बेहद संस्कारी, सारे सब्जेक्ट में फुल मार्क्स, खेलकूद में अव्वल, कल्चरल एक्टिविटीज में हमेशा आगे, यह तारीफ के काबिल है।

सुनिधि : सर, यह सभी टीचर्स की घर जाकर बहुत तारीफ करता है। स्कूल की एक–एक बात बताता है। पहले जरूर कभी–कभी कुछ टोकना–समझाना पड़ता था। लेकिन अब कुछ खास कहने की जरूरत नहीं पड़ती।

राजेश : सर, हम सब के प्रयास से यह समय की कद्र करना सीख गया है। चन्दन की पूरी दिनचर्या व्यवस्थित है। सुबह जल्दी उठना फिर फ्रेश होकर साइंस पढ़ता है। फिर नहा–धोकर नाश्ता करके स्कूल, वापस लौट कर हाथ–मुँह धो कर लंच। कुछ आराम फिर पढ़ाई फिर एक घंटे खेलकूद, टीवी पर एक घंटे न्यूज या डिस्कवरी चैनल उसके बाद रात ग्यारह बजे तक पढ़ाई और फिर सोना यह है इसकी दिनचर्या।

टीचर : अरे वाह! (चन्दन के सिर पर हाथ फेरते हुए) शाबाश बेटा! मैं क्लास में अकसर कहता हूँ कि हमें जीवन में समय का महत्त्व समझना चाहिए और साथ ही अनुशासन का पालन करना चाहिए। यही जीवन में हमें निरन्तर आगे ले जाते हैं।

सुनिधि : सर, माँ–बाप के बाद अगर संसार में किसी का ऊँचा दर्जा इस पृथ्वी पर है तो वह गुरु है। टीचर का दायित्व बहुत बड़ा है। उसे कभी पैसे से तो तौला ही नहीं जा सकता सर, आज की बाजारवादी व्यवस्था टीचर को मजदूर की तरह समझने लगी है। पेरेंट्स समझते हैं कि हम पैसे देते हैं तो टीचर पढ़ाता है। लोग गलत समझते हैं, टीचर शिक्षा के साथ–साथ जो संस्कार देता है वह अमूल्य हैं, उनका कोई मोल नहीं है।

टीचर : बहुत–बहुत शुक्रिया बहनजी कि आप टीचर्स के बारे में ऐसे अच्छे विचार रखती हैं!

राजेश : सर जी, बाहर तो कई देश ऐसे हैं जहाँ टीचर्स को समाज का सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है। वहाँ की सरकारों ने भी उनके मान–सम्मान की रक्षा के लिए तमाम योजनाएँ चला रखी हैं।

टीचर : जी राजेश जी, आज के बच्चे कल के भारत की तस्वीर के चित्रकार हैं। वह देश के सच्चे नागरिक बनें इसके लिए टीचर्स के साथ–साथ पेरेंट्स की भी जिम्मेदारी है। पेरेंट्स लाड़–प्यार के साथ–साथ बच्चों को संस्कार भी दें, यह बहुत आवश्यक है और हम सबकी जिम्मेदारी अब और भी बढ़ गई है जबकि तमाम टी.वी. चैनल्स और इंटरनेट की तमाम साइट्स बुराइयों का जहर फैला रही हैं।

राजेश : जी सर, सच कहा आपने! चन्दन को जब नेट से कुछ काम करना होता है तो हम विशेष सावधानी बरतते हैं!

टीचर : राजेश जी, आजकल पेरेंट्स छोटे बच्चों के हाथ में एंड्रायड फोन थमा देते हैं और बड़े गर्व से बताते हैं कि हमारा बच्चा सब चला लेता है। अरे! सब चला लेने के लिए उसे और बड़ा और समझदार होने दीजिए। अभी वह बच्चा है उसे बच्चा ही रहने दो। खैर! राजेश जी, खुशखबरी यह है कि चन्दन को इस साल बेस्ट स्टूडेंट का प्राइज दिया जाएगा। आप समय से आ जाइएगा!

राजेश : अरे वाह! थैंक यू सर। बहुत–बहुत थैंक्यू। यह सब आपकी मेहनत और आशीर्वाद का ही फल है।

टीचर : केवल मेरी नहीं हम सब की मेहनत का फल है यह राजेश जी। सारे टीचर्स के साथ–साथ आप की बहन जी और स्वयं चन्दन की, हम सब की मेहनत का फल।

सूत्रधार : तो आपने दो तरह के पेरेंट्स देखे और उनके बच्चे भी, अब आप स्वयं अपना मूल्यांकन कीजिए।

अशोक 'अंजुम'
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

अनोखा महाबलीपुरम

भारत के दक्षिण में चैन्नई की ऐतिहासिक धरोहर महाबलीपुरम को आज तक एक अनोखा स्थान माना जाता है। यहाँ पर बने अनोखे शिल्प चित्रकार की कल्पना नहीं है अपितु चैन्नई के समीप महाबलीपुरम के मन्दिर में चट्टानों पर उकेरी गई मूर्तियों में से दो हिरन की एक अद्भुत कलाकृति है, जिसके चित्र आप भारतीय दस रुपये के नोट में भी देख सकते हैं। यहाँ पत्थरों की दीवारों में लगभग पैंसठ देवी–देवता बने हुए हैं और एक मन्दिर, चौदह मनुष्य, दस हाथी, सोलह शेर, नौ हिरण, दो भेड़, दो कछुए, दो खरगोश, एक जंगली सुअर, एक बिल्ली, तेरह चूहे हैं। सात पक्षी, चार बन्दर, और आठ पेड़ बनाए गए हैं। साथ ही यहाँ पर गंगा का पृथ्वी पर आगमन, गोवर्धन पर्वत उठाए श्रीकृष्ण का चित्र बहुत आकर्षक है जिनकी शिल्प कला बहुत प्रसिद्ध है।

तमिलनाडु में कई प्राचीन शहर हैं जिनमें से एक है महाबलीपुरम जो समुद्र तट पर स्थित है। यह दक्षिण भारत के प्रमुख शहर चैन्नई से लगभग पचास किलोमीटर की दूरी पर बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित एक मन्दिर कस्बा है। यहाँ अनेक प्रसिद्ध मन्दिर हैं, तट मन्दिर और रथ गुफा मन्दिर इनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। इस शहर का इतिहास बहुत ही प्राचीन और भव्य है। इसका नाम महान दानवीर असुर राजा महाबली के नाम पर रखा गया था। 7वीं और 10वीं सदी के पल्लव राजाओं द्वारा बनाए गए कई मन्दिर और स्थान यहाँ की शोभा बढ़ा रहे हैं।

यहाँ प्राचीनकाल में सैंकड़ों मन्दिर थे। यह स्थान कई भव्य मन्दिरों, स्थापत्य कला और सागर–तटों के लिए बहुत प्रसिद्ध था। महाबलीपुरम के बारे में माना जाता है कि इसके तट पर 17वीं शताब्दी में 7 मन्दिर स्थापित किए गए थे और एक तटीय मन्दिर को छोड़ कर शेष 6 मन्दिर समुद्र में डूब गए थे। महाबलीपुरम में 8 रथ हैं जिनमें से पाँच को महाभारत के पात्र पाँच पाण्डवों और एक को द्रौपदी का नाम दिया गया है। इनका निर्माण बौद्ध विहार शैली तथा चैत्यों के अनुसार किया गया है। तीन मंजिल वाले धर्मराज रथ का आकार सबसे बड़ा है। द्रौपदी का रथ सबसे छोटा है और यह एक मंजिला है और इसमें फूस जैसी छत है। अर्जुन और द्रौपदी के रथ क्रमशः शिव और दुर्गा को समर्पित हैं।

शोर मन्दिर

महाबलीपुरम के समुद्र तट पर स्थित यह मन्दिर प्राचीन वास्तु कला का उदाहरण है। भगवान शिव और विष्णु को समर्पित शोर मन्दिर का निर्माण लगभग 700–728 ईस्वी के समय हुआ था। इसे 'स्टोन टैम्पल' भी कहते हैं क्योंकि मन्दिर वाला भाग ग्रेनाइट पत्थर से बना हुआ है जो बहुत ही सुन्दर दिखता है। मन्दिर के प्रांगण में सात पगोडा की पत्थर की मूर्तियाँ हैं जिन्हें देखना अद्भुत है। इस मन्दिर की एक अलग ही कथा है।

देखें पृष्ठ 25...

मोनी अपनी कक्षा में दस मेधावी बच्चों में से एक था। वो नियमित रूप से स्कूल आता, अपनी पढ़ाई करता था। मगर मोनी की एक आदत से हर कोई परेशान था। वो बिना कारण ही पूरी क्लास में सबको तंग करता था। किसी भी बात के लिए शर्त लगाता और दूसरा माने या ना माने उसको हैरान, परेशान करके ही दम लेता। कोई उसके तंग करने पर जोर से रोता और दुःखी होता तो मोनी को बहुत अच्छा लगता था।

अब तो उसकी शरारतें हद पार करने लगी थी। मोनी खूब कसरत, खेल–कूद करता था इसलिए बहुत ही फिट भी था। उससे हर कोई लड़ भी नहीं सकता था। एक दिन साइंस लैब में सब बच्चे परीक्षण कर रहे थे, वहाँ पर भी मोनी ने शगुन को बेमतलब ही इतना तंग किया कि उसका सारा प्रयोग ही बिगड़ गया। शगुन परेशान होकर एक कोने मे जाकर सुबकने लगा। करता भी तो आखिर क्या? वह तो बस डेढ़ पसली ही था, मोनी से पंगा लेने की उसकी तो बिलकुल हिम्मत नहीं थी।

लेकिन रवि सर ने मोनी को शरारत करते साफ–साफ देख लिया था। मगर वे उस समय बिलकुल खामोश रहे और चुपचाप शगुन के एकदम पास जाकर बैठ गये। रवि सर को देखकर शगुन चौंक गया और अपने आँसू पोंछकर बोला– "सर अगले हफ्ते जब लैब का पीरियड आयेगा तब मैं बिलकुल सही–सही फार्मूले पर सही रिजल्ट निकालकर आपको फिर से दिखा दूँगा।"

रवि सर को बहुत अच्छा लगा, शगुन ने एक बार भी मोनी की शिकायत नहीं की। रवि सर ने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा– "शगुन, बिलकुल फिक्र मत करो। लगभग सबके ही रिजल्ट आज सही नहीं आये हैं। वैसे भी अभी बहुत समय है।" शगुन शान्त रहा। ''कितना सच्चा और प्यारा है यह शगुन।" रवि सर बुदबुदा उठे। रवि सर ने मन ही मन शगुन से वादा किया कि अपनी शरारत की कहानी एक दिन मोनी खुद अपने मुँह से सबको सुनायेगा।

आज की घटना पर रवि सर को मन ही मन मोनी पर बहुत नाराजगी थी। वे बहुत बार मोनी को देख चुके थे और अब वे लगातार सोच रहे थे कि मोनी को कैसे सुधारा जाये? सोचते–सोचते अचानक रवि सर की आँखे चमक उठीं। उनको कुछ सूझ गया।

अब बस करो

अगले दिन रविवार था और सुबह से ही मोनी उनके साथ रहने वाला था। "वाह सर! आज तो मेरा रविवार यादगार होने वाला है। मैं बहुत खुश हूँ सर।" मोनी खिलखिलाता हुआ रवि सर से कहता जा रहा था।

"हाँ! मोनी, तुमने नाश्ता तो जमकर किया है ना! यह लो नारियल पानी पियो और बस यहीं से शुरू हो जाओ। आज तुमको लंच से पहले दस लोगों को जमकर तंग करना है और मुझे तुम्हारी काबिलियत पर शक नहीं।" रवि सर की बात पूरी हुई तो मोनी ने नारियल पानी की चुस्की लेते हुए कहा– "बिलकुल सर, सुबह आलू का परांठा खाया है। ये बंदा तो सबको रुलाकर ही हँसता है सर।'' मोनी को लगा कि वह बहुत ही बड़ा कलाकार है। अब वह नारियल पानी वाले को तंग करने लगा। कोशिश करते–करते मोनी को दस मिनट हो गये पर नारियल पानी वाला बिलकुल तंग नहीं हुआ। मोनी मन ही मन कुढ़कर रह गया।

थक कर पस्त मोनी रवि सर का इशारा पाकर आगे बढ़ गया और सब्जी वाले को चिढ़ाकर तंग करने लगा। सब्जी वाला जरा भी परेशान नहीं हुआ। मोनी ने दूसरी तरफ देखा कि एक युवक मिट्टी के बर्तन बेच रहा है। मोनी उसके बर्तनों का मजाक उड़ाने लगा पर इसका उलटा असर हुआ वह युवक हँसकर ताली बजाने लगा। मोनी ने हिम्मत नहीं हारी और वहीं पर जोकर जैसी हरकत करने लगा। अब भी युवक बिलकुल नहीं चिढ़ा।

मोनी तो हैरान रह गया कि उसके ग्राहक युवक को शाबाशी दे रहे थे– "वाह, वाह, बड़ा अच्छा साथी रखा है। रविवार को सबका मनोरंजन कर रहा है पर बाल मजदूरी तो अपराध है।" यह बातें मोनी के कान में भी पड़ गई तो वह बर्तन के ग्राहकों के पास जाकर बताने लगा कि– ''अरे, मैं नवीं में पढ़ता हूँ। बाल मजदूर नहीं हूँ।"

यह सुनकर लोग फिर उस बर्तन बेचने वाले युवक की तारीफ करने लगे– ''कैसे पेट काटकर अपने साथी को स्कूल में पढ़ाई करवा रहा है।" मोनी अब तक बुरी तरह खीज गया था। इतनी चिढ़ उसको आज तक पहले कभी महसूस नहीं हुई थी। रवि सर ने उसको नींबू की शिकंजी पिलाई और कहा– "मोनी हौसला रखो आज तुमको किसी एक को तो चिढ़ाना ही है। लगे रहो, जोश में।"

मोनी ने रवि सर की बात सुनकर सिर हिलाया और नींबू शिकंजी का गिलास ले लिया। गटागट पीकर खाली किया। आज कुछ अनोखा करना चाहता था। मोनी ने पलटकर पीछे देखा। एक मैदान था, वहाँ कुछ बच्चे कबड्डी खेल रहे थे। मोनी उनके पास गया और ताली बजाकर उनके खेल की जमकर खिल्ली उड़ाने लगा। बच्चे भी हँसने लगे। मगर मोनी नहीं माना तो बच्चों ने उसको मैदान में बुला लिया। मोनी यही तो चाहता था। मोनी जानता था कि खेल के नियम कैसे बदले जाते हैं। वह मैदान में आया और खेल दोबारा शुरू हो गया। मगर यहाँ कुछ उलटा ही हुआ। मोनी का खेल बिगड़ गया। वहाँ पर मोनी को ऐसी पटखनी मिली कि वह हाय–हाय करता हुआ, मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ।

रवि सर ने उसको जैसे–तैसे बचाया। रवि सर ने कहा कि– ''वे पक्के खिलाड़ी हैं। इसलिए उनका बुरा मत मानो, अब लंच का समय हो गया है इसलिए चलो, अब लंच करते हैं।" मोनी मान गया। वह बहुत थक गया था और उसका सुबह वाला आलू का परांठा पच गया था। मोनी ने रवि सर के साथ स्वादिष्ट दाल–भात, पूरी–सब्जी और रायते का आनन्द लिया। मोनी ने लंच के लिए रवि सर को शुक्रिया कहा और अब वह अपने घर वापस जाना चाहता था। रवि सर ने उसको सलाह दी– "एक दाँव और आजमा लो शायद किसी को तंग कर सको।"

मोनी ने रवि सर से कहा– "सर, आज तो मैं थक गया हूँ। मगर, कमाल है कि न जाने क्यों, अब मुझे किसी को भी चिढ़ाने की इच्छा तक नहीं हो रही है।" रवि सर ने कुछ नहीं कहा, बस हौले से हँसकर उसको अपनी स्कूटी पर बिठाया और उसके घर तक छोड़कर वापस आ गये। लौटते समय नारियल पानी वाला, सब्जी वाला, बर्तन वाला और खिलाड़ी बच्चे रवि सर को बार–बार शुक्रिया कर रहे थे। रवि सर ने एक जोकर से मुलाकात करवा कर उनका दिन मजेदार बना दिया था। रवि सर ने भी शान्तिपूर्ण सहयोग के लिए उनको धन्यवाद कहा।

अगले दिन स्कूल में एक अतिथि आये। वे असेंबली में ही सब बच्चों से बातचीत करने लगे। उनकी बातें सुनकर दो तीन बच्चों ने अपने अपने अनुभव साझा किये। रवि सर ने इशारा किया तो शगुन भी आया और उसने एक शरारती बच्चे की घटना सुनाई जिसको नारियल पानी वाले से लेकर मैदान में खेलते बच्चों ने खूब रुलाया।

यह कहानी सुनते ही मोनी जोश में आ गया। वह बिना कुछ सोचे समझे मंच पर गया और माइक पर बोला– "यह सरासर गलत कहानी है। सच तो यह है कि मैंने सबको तंग किया पर कोई परेशान नहीं हुआ। और फिर एक–एक करके मोनी ने पूरा किस्सा सुना दिया। यहाँ तक कि उसने तीन दिन पहले, लैब मे शगुन को तंग करने वाला किस्सा भी सुना दिया।

शगुन ने दाँतों तले अँगुली दबा ली। रवि सर की आँखें उससे मिली और दोनों मुस्कुरा दिये। सारा स्कूल और सब अध्यापक भौंचक रह गये। मोनी अपनी शरारत खुद सुना रहा था। एकदम सन्नाटा छा गया। अतिथि महोदय ने मोनी की तरफ मुस्कुराकर प्रतिक्रिया दी और असेंबली खत्म हो गई। हेडमास्टर ने अतिथि का बहुत सम्मान करके उनको विदा किया। रवि सर ही उन मनोवैज्ञानिक अतिथि को विद्यालय में लाये थे। उसके बाद स्कूल में सामान्य रूप से कक्षा लगीं और हर दिन स्कूल चलता रहा।

अब अगले हफ्ते फिर से विज्ञान की लैब में शगुन काम कर रहा था। मगर कमाल हो गया था। मोनी भी वहीं उसके पास ही था पर वह सामान्य था। इस तरह दिन, महीने बीत गये। सब बच्चे पास होकर दसवीं में आ गये। मगर मोनी की रुला देने वाली शरारत को जाने क्या हो गया था। मोनी अब हँसता था, ताली बजाकर नाचता था मगर किसी का काम नहीं बिगाड़ता था।

पूनम पांडे
अजमेर (राजस्थान)

'अनोखा महाबलीपुरम' पृष्ठ 22 का शेष...

मक्खन गेंद

महाबलीपुरम का एक और मुख्य आकर्षण है– कृष्ण की मक्खन गेंद जिसे स्थानीय लोग 'कृष्णा'ज बटर बॉल' कहते हैं। यह पुराना गोल पत्थर है जिसका व्यास 5 मीटर और ऊँचाई 20 फीट है। इसे देखकर लगता है, यह किसी समय भी लुढ़क सकता है। 1908 में मद्रास के तत्कालीन गवर्नर आर्थर ने इसे हटवाने के लिए सात हाथियों से खिंचवाया था परन्तु यह टस से मस नहीं हुआ और गुरुत्व के सभी नियमों को ताक पर रख कर आज भी ढलान वाली चट्टान पर 45 डिग्री के कोण पर मजबूती के साथ कायम है।

पंच रथ मन्दिर

महाबलीपुरम के समुद्र तट पर दूसरा मन्दिर पंच रथ या पंच पांडवों का रथ नामक मन्दिर है। यह एक सुन्दर स्मारक परिसर है जिसका निर्माण 7वीं सदी में महेंद्र वर्मन प्रथम और बेटे नरसिंह वर्मन प्रथम ने करवाया था। पंच रथ के पाँच स्मारकों को पूरी तरीके से रथ के समान बनाया गया है जो सभी ग्रेनाइट पत्थर को खोद–खोद कर बनाए गए हैं। इसमें महाभारत की कहानी को दर्शाने वाली कलाकृतियाँ मिलती हैं।

ये सभी रथ बड़े से छोटे आकार में इस प्रकार से हैं– धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल एवं सहदेव रथ और द्रौपदी रथ। ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि कांचीपुरम में 7वीं सदी में पल्लव शासन के दौरान चीनी यात्री ह्वेन त्सांग आए थे और राजा महेंद्र पल्लव ने उनकी अगवानी की थी। शक्तिशाली पल्लव शासकों के महाबलीपुरम का करीब 2000 साल पहले चीन के साथ खास सम्बन्ध था। उन्होंने अपने शासनकाल में वहाँ दूत भेजे थे। अपनी लिखित पुस्तकों मे ह्वेन त्सांग ने महाबलीपुरम का विशद वर्णन किया है। सचमुच, यह भारत के गौरवपूर्ण अतीत का प्रमाण है। नवम्बर 2019 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग का स्वागत करने के लिए इसी ऐतिहासिक नगरी महाबलीपुरम का चयन किया था।

मुगधा पाण्डे
नई दिल्ली

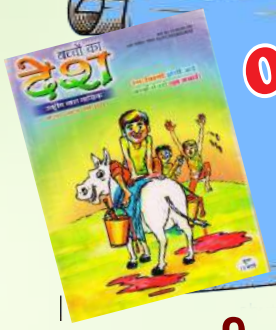

OLD IS GOLD

बच्चों का देश

मार्च 2008 से

कीमती हीरा

पानी के एक जहाज में अनेक यात्री यात्रा कर रहे थे। अचानक किसी की आवाज सुनाई दी। जहाज में एक आदमी चिल्ला रहा था– ''हाय मेरा हीरा... कीमती हीरा।'' यह आवाज सुनकर सभी यात्री उसके पास पहुँच गए और पूछने लगे– ''चिल्ला क्यों रहे हो? तुम्हारा हीरा कोई ले गया क्या?'' वह आदमी कहने लगा– ''मेरे पास कीमती हीरा था। किसी यात्री ने वह चुरा लिया है।''

अब तक जहाज का कप्तान भी वहाँ पहुँच चुका था। उसने पूरी बात सुनकर यात्रियों की तलाशी लेने का आदेश दिया। सबकी तलाशी ली गई। यात्रियों की सभी चीजें और जहाज का कोना–कोना छान मारने के बाद भी हीरा नहीं मिला। सबको लगा

कि या तो शोर मचाने वाला आदमी झूठा है या हीरा चुराने वाला बहुत ही होशियार। वास्तव में बात यह थी कि उस आदमी ने जहाज में यात्रा कर रहे एक धनिक के पास एक कीमती हीरा देख लिया था। हीरा देख कर उसके मन में लालच आ गया। उसने उसे हथियाने की तरकीब सोची। उसके बाद उसने हीरा चोरी हो जाने का नाटक किया। उसे विश्वास था कि तलाशी लेने पर उस धनिक के पास से हीरा मिलेगा और वह उसे अपना हीरा बता कर आसानी से हथिया लेगा, लेकिन किसी भी यात्री के पास से हीरा नहीं मिला। धनिक की भी तलाशी ली गई परन्तु उसके पास भी हीरा नहीं था।

जहाज जब गोदी पर रुका और यात्री उतरने लगे तब वह आदमी धनिक के पीछे–पीछे चलने लगा। कुछ दूर तक पीछे–पीछे चलने के बाद वह धनिक के पास आया। उसने अपना नाटक करने का कारण बताते हुए धनिक से पूछा– ''मैंने आपके पास हीरा देख लिया था और उसे हथियाने की वह तरकीब निकाली थी। मैं अभी तक यह समझ नहीं पाया कि जो हीरा आपके पास देखा था वह तलाशी लेने पर भी क्यों नहीं मिला? कहाँ छुपा रखा था वह हीरा?''

धनिक ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया– ''मित्र, मेरे पास हीरा अवश्य था। जिस समय तुमने शोर मचाना शुरू किया, तभी मैं तुम्हारी चालाकी समझ गया था। मुझे लगा कि मेरी भी तलाशी अवश्य ली जाएगी ओर तलाशी में मेरे पास हीरा अवश्य मिलेगा। उस समय मैं अपना जितना भी बचाव करता, हो सकता था कि किसी को मेरी बात पर विश्वास न होता और मुझे चोर समझा जाता। अतः बिना देर किए मैंने वह हीरा चुपके से समुद्र में फेंक दिया था। मित्र! धन तो कभी भी कमाया जा सकता है परन्तु प्रतिष्ठा गई तो समझो सब कुछ गया। धन से भी अमूल्य चीज प्रतिष्ठा होती है मित्र।'' और धनिक आगे बढ़ गया।

डॉ. हूंदराज बलवाणी
अहमदाबाद (गुजरात)

प्रेरक प्रसंग

सबक

डॉ. राममनोहर का जन्म सन् 1910 में हुआ था। ढ़ाई वर्ष की उम्र में ही उनके सिर से माँ की ममता का साया उठ गया था। वे दादी के सहारे बड़े हुए। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें पाठशाला भेजा गया।

पाँचवीं कक्षा में डॉ. राममनोहर को 'विश्वैश्वरनाथ हाई स्कूल' में भर्ती करवाया गया। विद्यालय जाते समय एक दिन उन्होंने देखा कि उन्नीस–बीस साल का एक युवक छोटे से बालक की पिटाई कर रहा हैं। यह देखकर उनका कोमल हृदय कराह उठा। उन्हें यह अन्याय व अत्याचार लगा। उनका मन उस अत्याचारी युवक के प्रति घृणा व आक्रोश से भर उठा। हालाँकि राममनोहर दुबले–पतले थे लेकिन उन्होंने तुरन्त अपना बस्ता पटका और उस बालक को छुड़ाया। युवक शर्मिन्दा था उसने बच्चों को कभी न पीटने का वादा किया।

गंगा गणित पहेलियाँ

गोपीचन्द श्रीनागर, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

1

एक बाग में दो कुत्तों ने
खूब किया हंगामा,
भौं–भौं सुनकर चढ़े पेड़ पर
तीनों बन्दर मामा।

दौड़ा–दौड़ा केशव आया
लेकर ढेले बारह,
उसे देखकर सारे होते
फौरन नौ–दो ग्यारह।

यहाँ दिए वो सब अंकों का
जो भी योग बताए,
सबसे पहले अपनी माँ से
वह शाबाशी पाए।

उत्तर : 1++2+3+12+9+2+11=40

2

दो साधुओं ने एक गंगा में
मारी डुबकी आठ,
एक तख्त पर त्रिकुंड लगाकर
किया राम का पाठ।

उन्हें मिले थे भेंट में बीस
पैसे ताँबे के,
आए थे जो चार जने सँग
लाला बॉम्बे के।

यहाँ दिए इन सब अंकों का
झटपट योग बताओ,
योग बताकर माँ के हाथों
मालपुआ तुम खाओ।।

उत्तर : 2+1+8+1+3+20+4+1=40

अब तुम मत रोना

मेरे प्यारे बिट्टू

कैसे हो बेटा? मैं यहाँ पर बहुत अच्छी हूँ और रोज तुम्हें बहुत याद करती हूँ। जब से तुम होस्टल गये हो न, घर खाली–खाली सा हो गया है। अब न तो घर में खिलौने बिखरते हैं और न कोई गले में चुपके से बाँहें डालता है और न कोई झूठमूठ का रूठता है। अब मैं तुम्हारे बगैर रहने की आदत डाल रही हूँ बिट्टू, ये मुश्किल है पर धीरे–धीरे हो जायेगा।

कल तुम्हारी वार्डन का फोन आया था उन्होंने बताया कि तुम बहुत उदास रहते हो और किसी से न ज्यादा बात करते हो, न ही घुलते–मिलते हो। ऐसा क्यों है बिट्टू? शायद तुम अपनी मम्मी से नाराज हो, क्योंकि उन्होंने तुम्हें होस्टल में भेज दिया।

ना ना बिट्टू, ऐसा नहीं है। तुम्हारी मम्मी तुमसे बहुत प्यार करती हैं। तुम्हें खूब पढ़ा–लिखा कर अच्छा इनसान बनाना चाहती हैं। इसलिये उनको, तुम्हें होस्टल भेजना पड़ा। तुम तो जानते हो तुम्हारे पापा बहुत जल्दी ही हमें छोड़कर ईश्वर के पास चले गये थे, इसलिए घर और ऑफिस दोनों का काम तुम्हारी मम्मी को ही करना पड़ता है और घर में तुम्हारी देखभाल के लिए कोई नहीं है।

मेरा राजा बेटा, तुम खुश रहा करो और दिल लगाकर पढ़ाई किया करो। खेल के समय खेला भी करो। खेलना तुम्हारी सेहत के लिये बहुत जरूरी है। जैसे हमें बड़े होने के लिये खाना खाने की जरूरत होती है वैसे ही हमें फिट रहने के लिये खेल और व्यायाम की जरुरत होती है। बिट्टू बेटा, एक बात बताओ तो सही? तुम्हारे स्कूल में तो बहुत सारी हरियाली और पेड़–पौधें होंगे? हैं न? सुबह थोड़ा जल्दी उठकर उनके पास जाया करो। उन्हें छुआ करो। देखना वो बहुत खुश होंगे, जैसे जब तुम्हें कोई प्यार करता है तो तुम भी बहुत खुश हो जाते हो।

बिट्टू! तुम्हें पता है पेड़ भी साँस लेते हैं। हमारी तरह हँसते और रोते हैं। जब हम उनके पास जाते हैं तो उन्हें बहुत अच्छा लगता है। खुश होकर वो हमें ऑक्सीजन देते हैं जो हमारी सेहत के लिये बहुत जरूरी है और हाँ बिट्टू, अपने घर के बगीचे में जो छोटे–छोटे पौधे थे न, उनमें अब टमाटर आने लगे हैं। जब तक तुम छुट्टियों में आओगे वह पक कर लाल हो जायेंगे फिर तुम उन्हें खाना और टमाटर की तरह लाल–लाल हो जाना। कितना मजा आयेगा? हम दोनों मिलकर पकड़म–पकड़ाई खेलेंगे तो लाल–लाल टमाटर खूब हँसेंगे।

तुम वहाँ भी खूब सारे दोस्त बनाना और उन्हें प्यार करना, फिर देखना वो भी तुम्हें बहुत सारा प्यार करेंगे। कहते हैं हम अच्छा या बुरा जो भी काम करते हैं ईश्वर हमें चार गुना बढ़ाकर वापस देता है। इसलिए हमेशा वही चीजें करनी चाहिये जो अच्छी और प्यारी हों।

तुम्हें पता है? हमने अपने मिट्ठू को उड़ाया था, वह मिट्ठू हमें भूला नहीं है। रोज छत पर आता है और कभी हरी मिर्च, कभी अमरूद खाकर उड़ जाता है। ईश्वर ने उसे पंख उड़ने के लिए दिये हैं जैसे हमें पैर दिये हैं चलने के लिए। अगर हमारे पैरों को कोई बाँध दे तो हमें कैसा लगेगा? ऐसा ही मिट्ठू को पिंजरे में लगता होगा। इसलिए हमें जानवर, पक्षी सबसे प्यार करना चाहिये। है न? अब तुम बिलकुल मत रोना, ठीक है? चलो हँस के दिखाओ जल्दी। अच्छा बिट्टू, अब मैं लिखना बन्द कर रही हूँ। तुम अपना ख्याल रखना। मेरी चिट्ठी का जवाब लिखकर ही देना, ताकि जब भी मेरा मन करे उसे पढ़ सकूँ। तुम्हारी सुन्दर सी लिखावट पर हाथ फिरा सकूँ। मेरा बहुत सारा आशीर्वाद।

तुम्हारी मम्मी

पत्र लेखन : छाया अग्रवाल, बरेली (उत्तर प्रदेश)

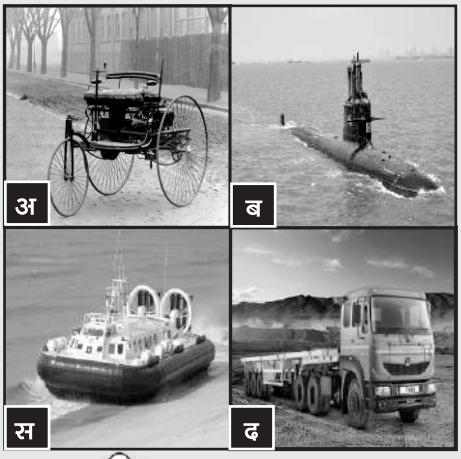

दस सवाल दस जवाब

(1) इन चित्रों को पहचानिये।

(2) भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग कौनसा है?

(3) भारतीय रेलवे का विश्व में कौनसा स्थान है?

(4) भारत में पहला पोस्ट ऑफिस कहाँ स्थापित हुआ?

(5) देश में प्रधानमन्त्री सड़क परियोजना कब प्रारम्भ हुई?

(6) भारत के किस राज्य में सबसे अधिक पक्का सड़क मार्ग है?

(7) दिल्ली, मुम्बई, चैन्नई एवं कोलकाता को जोड़ने वाली सड़क मार्ग परियोजना का क्या नाम है?

(8) सबसे सस्ती परिवहन प्रणाली कौनसी है?

(9) NHAI का पूरा नाम क्या है?

(10) भारत में पहली मेट्रो सेवा कहाँ प्रारम्भ हुई?

उत्तर इसी अंक में

- बेटा– पिताजी, मैं कल रात एक बजे तक पढ़ता रहा।
  पिताजी– पर कल रात को तो दस बजे बाद तो सारे मोहल्ले की बिजली चली गई थी।
  बेटा– पिताजी मैं पढ़ाई में इतना मगन था कि मालूम ही नहीं चला कि लाइट कब चली गई।

- मुकेश– रमेश! तुमने ये क्या फैशन कर रखा है आगे से शर्ट अन्दर है और पीछे से बाहर निकाल रखा है।
  रमेश– अरे यार, क्या बताऊँ? दरअसल मेरी आगे से शर्ट फट गई है और पीछे से पैंट।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

नम्रता सारे सद्गुणों का दृढ़ स्तम्भ है।

❖

जब क्रोध आये तो उसके परिणाम पर विचार करो।

❖

बिना चिन्तन का अध्ययन तो परिश्रम का व्यर्थ जाना है।

❖

यह जानते हुए कि सही क्या है, फिर भी उसे नही करना सबसे बड़ी कायरता है।

❖

वही सच्चा साहसी है जो कभी निराश नहीं होता।

❖

सावधान व्यक्ति प्रायः कम ही भूलें करते हैं।

कन्फ्यूशियस

बरखा ऋतु

डॉ. अलका अग्रवाल
जयपुर (राजस्थान)

चम–चम चमके बिजली रानी।
बादल लाए भर कर पानी।
मेघा देखो, कितने दानी।
बूँदें इनको हैं बरसानी।

धरती ओढ़े चूनर धानी।
सब ने अपनी छतरी तानी।
बच्चे करते हैं शैतानी।
पानी में है नाव तैरानी।

बरखा में, छप–छप मनमानी।
जब–जब भीगें, डाँटें नानी।
बरखा की यह मधुर कहानी।
बच्चों की यह सदा सुहानी।

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

लापरवाही का एहसास

संजू कक्षा सात में पढ़ रहा था। पढ़ने में ठीक–ठीक था पर खेलकूद में हमेशा आगे रहता था। उसके स्कूल की तरफ से उनके क्लास के बच्चों को पिकनिक पर ले जा रहे थे। संजू माँ बाप का अकेला बच्चा था। पर माँ कुछ ज्यादा ही डरपोक थी। उनका बस चलता तो वह स्कूल भी न जाने देती पर यह तो हो नहीं सकता था। संजू को पिछले वर्ष भी पिकनिक पर नहीं जाने दिया था। पर इस बार वह जिद पर अड़ गया था कि चाहे कुछ हो जाये मैं जरूर जाऊँगा।

आखिर पापा ने माँ को समझा बुझाकर उसे भी जाने की स्वीकृति दे दी थी। अब संजू दूसरी जिद कर रहा था। वह साथ में मोबाइल ले जाना चाहता था। माँ ने बहुत समझाया– ''तुम पिकनिक पर मनोरंजन के लिए जा रहे हो, इतने सारे बच्चे साथ होंगे, वहाँ मोबाइल की क्या जरूरत है?'' ''जरूरत है माँ तभी तो ले जाना चाहता हूँ, अधिकतर बच्चे मोबाइल ले जा रहे हैं। रास्ते में हम इस पर गाने सुनते हुए, गेम खेलते हुए जाएँगे।''

''बेटा महँगा मोबाइल है, तू खेल–खेल में कहीं रखकर भूल गया तो? कहीं गिर कर टूट भी सकता है।'' माँ के सामने अपनी दाल न गलती देखकर वह पापा के पास गया– ''पापा देखो न माँ मोबाइल नहीं ले जाने दे रही।'' ''वहाँ मोबाइल का क्या करोगे बेटा?'' ''आप लोगों से पहली बार दूर जा रहा हूँ, याद आएगी तो वीडिओ कॉल कर लूँगा। पिकनिक पर जा रहे हैं तो वहाँ के यादगार फोटो खींचूँगा।''

उसकी बात सुनकर पापा भी भावुक हो गये और पत्नी से बोले– ''सुनो इतना कह रहा है तो ले जाने दो न, खोने का रिस्क तो है पर बच्चे जिम्मेदारी ऐसे ही सीखते हैं। दूसरे बच्चे भी ले जा रहे हैं, उन्हें देखकर इसमें हीनता की भावना आएगी।'' मन मार कर माँ ने मोबाइल ले जाने की इजाजत तो दे दी पर साथ में बहुत सारी हिदायतें भी दे दीं। पापा ने भी समझाया– ''देखो बेटा वहाँ कोई शरारत नहीं करना, ग्रुप में ही रहना और शिक्षकों का कहना मानना।''

संजू ने आज्ञाकारी बच्चे की तरह सिर हिलाकर सब बातें मान लीं। खाते–पीते, अंताक्षरी खेलते बच्चे बस से सफर पर निकल गए। रिसोर्ट बहुत सुन्दर था। वहाँ से अच्छे–अच्छे दृश्य दिखाई दे रहे थे, स्वीमिंग पूल भी था। जिन बच्चों को तैरना आता था वह तो खुशी से ऐसे उछलने लगे जैसे उनकी लॉटरी निकल आई हो या उन्हें घर और स्कूल द्वारा मोबाइल हमेशा साथ रखने की अनुमति मिल गई हो। पर जिन्हें तैरना नहीं आता था वह उदास हो गये थे।

एकाएक यह सोच कर सब बच्चे परेशान हो गये कि स्वीमिंग कॉस्ट्यूम तो वे लाये ही नहीं हैं पर

बड़मूड़ा सबके पास था, वे उसे पहन कर पूल में उतर गए, किसी ने रोका भी नहीं। जिन्हें तैरना आता था, उन्हें भी गहरे में जाने से कड़ाई से मना कर दिया गया था। शिक्षक वहीं आसपास थे पर संजू बड़ा निराश था, उसे माँ ने स्वीमिंग नहीं सीखने दी थी। आती होती तो आज वह भी तैरता। दोस्तों ने तैरते हुए अपने–अपने फोटो लेने का काम उसे सौंप दिया था। वह फोटो तो ले रहा था पर थोड़ा उदास भी था कि तैरते हुए उसका कोई फोटो नहीं होगा। घर लौटकर उसने स्वीमिंग सीखने का मन बना लिया था।

उसे याद आया कि कैमरे से पूल के साथ सेल्फी तो ले ही सकता हूँ। वह ऐसी जगह तलाशने लगा जहाँ से पीछे खूब पानी दिखे और व्यू भी अच्छा आए। सेल्फी लेते समय वह इतना मगन हो गया था कि किनारे का उसे ध्यान ही नहीं रहा और वह पूल में गिर गया। अच्छा था कि वहाँ पानी गहरा नहीं था। बच्चों और शिक्षकों की मदद से वह बाहर निकल आया। उसका मोबाइल भी पानी में गिर गया था। वह तो बहुत डर गया था कि अब घर पर उसको बहुत डाँट पड़ेगी। बेवकूफी से उसने अपनी जान तो खतरे में डाली ही, माँ का महँगा मोबाइल भी खराब कर दिया था। मोबाइल ख़राब हो जाने की वजह से वह बहुत देर से अपने घर बात नहीं कर पाया था। वह जानता था कि मम्मी परेशान हो रही होंगी। आते समय मम्मी ने उसके एक दोस्त का नम्बर भी ले लिया था।

संजू से मोबाइल पर सम्पर्क न हो पाने के कारण मम्मी ने दोस्त के मोबाइल पर बात की। दोस्त से पूरी जानकारी पाकर मम्मी ने संजू से बात कराने को कहा पर मम्मी तो रोने लगी थीं। पापा ने मोबाइल लेकर हैलो कहा ही था कि संजू रूआँसा होकर बोला– ''सॉरी पापा, मम्मी का महँगा मोबाइल खराब हो गया।''

''तू तो सुरक्षित है न बेटा? हमारे लिए यही बहुत है। मोबाइल का क्या है, दूसरा आ जाएगा, अपना ध्यान रखना।'' पापा से बात करने के बाद भी उसे अपनी लापरवाही का अहसास तो हो रहा था पर मन से डर निकल गया था। वह पुनः दोस्तों के साथ खेलकूद में मगन होने की कोशिश करने लगा था।

पवित्रा अग्रवाल
बेंगलूरु (कर्नाटक)

जरा हँस लो

ग्राहक वेटर से– मटर पनीर की सब्जी ले आओ।

वेटर– यह लीजिए, मटर पनीर।

ग्राहक– अरे यह कैसी सब्जी है, इसमें न तो मटर है न पनीर।

वेटर– साहब क्या आपने गुलाब जामुन देखा है? उसमें न तो गुलाब होता है और न ही जामुन।

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ–नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

	3	9	2		8	7	1	5
6		8			1			
	5		9	3		8	4	6
7		4		1			5	8
8	1		6	4		3	7	
	2		8		5	1		4
5		3		9			2	1
	4	1	5		3			7
9			1	2		5	8	

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक महिला ने बड़े सम्मान पूर्वक आवाज दी– "आ जाइए मैडम, आप यहाँ बैठ जाइये।" कहते हुए उसे अपनी सीट पर बैठा दिया, खुद वह गरीब सी महिला बस में खड़ी हो गई। मैडम ने कहा– "बहुत–बहुत धन्यवाद, मेरी बुरी हालत थी सच में।" उस गरीब महिला के चेहरे पर एक सुख भरी मुस्कान फैल गई। कुछ देर बाद शिक्षिका के पास वाली सीट खाली हो गई। लेकिन महिला ने एक अन्य महिला को, जो एक छोटे बच्चे के साथ यात्रा कर रही थी और मुश्किल से बच्चे को थामे हुए थी, को सीट पर बिठा दिया।

अगले पड़ाव पर बच्चे के साथ महिला भी उतर गई, सीट खाली हो गई, लेकिन उस महिला ने बैठने का लालच नहीं किया, बस में चढ़े एक कमजोर बूढ़े आदमी को बैठा दिया जो अभी–अभी बस में चढ़ा था। सीट फिर से खाली हो गई। बस में अब कुछ सवारियाँ ही रह गई थीं, अब उस अध्यापिका ने महिला को अपने पास बिठाया और पूछा– "बस में सीट कितनी बार खाली हुई है लेकिन आप लोगों को ही बैठाते रही, खुद नहीं बैठीं, क्या बात है?"

महिला ने कहा– "मैडम, मैं एक मजदूर हूँ, मेरे पास इतने पैसे नहीं है कि मैं कुछ दान कर सकूँ तो मैं क्या करती हूँ कि कहीं रास्ते से पत्थर उठाकर–एक तरफ कर देती हूँ कभी किसी को पानी पिला देती हूँ, कभी बस में किसी के लिए सीट छोड़ देती हूँ, फिर जब सामने वाला मुझे आशीर्वाद देता है तो मैं अपनी गरीबी भूल जाती हूँ। दिन भर की थकान दूर हो जाती है। पैसा धेला न सही, सोचती हूँ आशीर्वाद तो मिल ही जाता है और हमें लेकर भी क्या जाना है यहाँ से।"

शिक्षिका अवाक रह गई, एक अनपढ़ सी दिखने वाली महिला इतना बड़ा पाठ जो पढ़ा गई थी। अगर दुनिया के आधे लोग ऐसी सोच को अपना लें– तो धरती स्वर्ग बन जाएगी। दान सिर्फ धन से नहीं, मन से भी होता है।

1

लेकर अपने साथ सभी को
गोल-गोल मैं घूमा करती।
चाहे कोई भी मौसम हो
अपने पथ पर चलती रहती।।

2

जब चाहूँ मैं वापस आता
सारे नभ में धूम मचाता।
खेतों को मैं सींचा करता
नदियों में पानी भर जाता।।

3

मैं ही सबकी प्यास बुझाता
पर मैं खुद प्यासा रह जाता।
धरा की गोद में छिप बैठा
सब प्राणी का जीवन दाता।

4

एक किले के अन्दर देखो
छिपकर बैठे बत्तीस चोर
जो भी आए कुचला जाए
मचाते कभी नहीं वह शोर।।

5

जाड़े को यह दूर भगाए
बच्चे इसमें रहे समाएँ।
दादी नानी कहे कहानी
साथ बैठे सभी गर्माएँ।

मीरा सिंह 'मीरा'
डुमराँव (बिहार)

उत्तर इसी अंक में

उत्तर प्रदेश का माधोपट्टी
अफसरों का गाँव

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 240 किलोमीटर दूर पूरब दिशा में स्थित है गाँव माधोपट्टी जो जौनपुर जिले में है। जिला मुख्यालय से 11 किलोमीटर पूर्व दिशा में स्थित माधोपुर पट्टी गाँव में एक बड़ा सा प्रवेश द्वार इस गाँव के खास होने की पहचान कराता है।

कहलाया अफसरों का गाँव

करीब 800 की आबादी वाले इस गाँव में अकसर लाल–नीली बत्ती वाली गाड़ियाँ नजर आती हैं क्योंकि इस गाँव के लगभग हर घर में एक आईएएस और आईपीएस अफसर है। कहा जाता है इस गाँव में सिर्फ आईएएस और आईपीएस अफसर ही जन्म लेते हैं। इसलिए इसे पूरे जिले में अब अफसरों वाला गाँव कहते हैं। इस गाँव में महज 75 घर हैं, लेकिन यहाँ के 47 आईएएस अधिकारी उत्तर प्रदेश समेत दूसरे राज्यों में सेवाएँ दे रहे हैं।

ब्रिटिश शासन से शुरू हुआ सिलसिला

गाँव के युवकों में प्रतियोगी परीक्षाओं में जाने की होड़ अँग्रेजों के जमाने से ही शुरू हो गई थी। 1914 में गाँव का युवक मुस्तफा हुसैन पीसीएस में चयनित हुआ था। इसके बाद 1952 में इन्दु प्रकाश सिंह का आईएएस की 13वीं रैंक में चयन हुआ। इन्दु प्रकाश के चयन के बाद गाँव के युवाओं में आईएएस–पीसीएस के लिए होड़ सी मच गई। इन्दु प्रकाश सिंह फ्रांस सहित कई देशों में भारत के राजदूत रहे। इंदु प्रकाश के बाद गाँव के ही चार सगे भाइयों ने आईएएस बनकर नया कीर्तिमान बनाया। वर्ष 1955 में देश की सर्वश्रेष्ठ परीक्षा पास करने के बाद विनयसिंह आगे चलकर बिहार के प्रमुख सचिव बने तो वर्ष 1964 में इनके दो सगे भाई छत्रपालसिंह और अजयसिंह एक साथ आईएएस के लिए चुने गए। माधोपट्टी के डॉ. सजल सिंह बताते हैं– "ब्रिटिश हुकूमत में मुस्तफा हुसैन के कमिश्नर बनने के बाद गाँव के युवाओं को प्रेरणास्रोत मिल गया। उन्होंने गाँव में जो शिक्षा की अलख जगाई वह आज पूरे देश में नजर आती है।"

अन्य क्षेत्रों में भी सक्रिय

माधोपट्टी की धरती पर पैदा हुए बच्चे, इसरो, भाभा, मनीला और विश्व बैंक तक में अधिकारी हैं। सिरकोनी विकास खण्ड का यह गाँव देश के दूसरे गाँवों के लिए रोल मॉडल बन चुका है। अफसर बनने के साथ ही दूसरे पेशों में भी गाँव के युवक–युवतियाँ नाम रोशन कर रहे हैं। यहाँ के निवासी अमित पांडेय केवल 22 वर्ष के हैं लेकिन इनकी लिखी पाँच किताबें 2015 में प्रकाशित हो चुकी हैं। इस गाँव के अन्मजेयसिंह विश्व बैंक मनीला में, डॉक्टर नीरू सिंह व लालेन्द्र प्रताप सिंह वैज्ञानिक के रूप भाभा इंस्टीट्यूट, तो ज्ञानू मिश्रा राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थान इसरो में सेवाएँ दे रहे हैं। युवकों के साथ यहाँ की बेटियों और बहुओं ने भी गाँव का मान बढ़ाया है। पीसीएस अधिकारियों की तो यहाँ पूरी फौज है।

गाँव में पढ़ने वाले छात्रों के लिए मिसाल

बिना कोचिंग, बिना शहरी आकर्षण के भी यह गाँव ज्ञान के आलोक से रोशन है। माधोपट्टी के लोग उन सभी लोगों के लिए मिसाल हैं जो केवल इस बात से डर कर पीछे हट जाते हैं कि वे तो गाँव के रहने वाले हैं और गाँव से अफसर कैसे पैदा होंगे। लेकिन इन्होंने दिखा दिया कि जो मेहनत करता है उसे सफलता जरूर मिलती है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

चीकू का खान-पान

चीकू को रोज पॉकेट मनी के रूप में दस–बीस रुपये मिलते थे। चीकू का मन हमेशा चटपटी और मसालेदार चीजें खाने को होता था। वह, रोज ठेले पर चाट–पकौड़ी और छोले कुलछे खाता था। उसके चटपटे खानों की सूची बहुत बड़ी थी।

चीकू को घर के सभी लोग बहुत प्रेम करते थे। इसलिए वह इसका फायदा उठाता था। वह पढ़ने में भी बहुत तेज था। इसलिये घर में उसकी चलती थी। उसे कोई कुछ कह भी नहीं पाता था। एक तरह से वह घर का दुलारा बच्चा था। उसे केक–पेस्ट्री, समोसे–कचौरी बहुत भाते थे। मोमोज जैसी तीखी चीजों को देखकर हमेशा उसके मुँह में पानी आ जाता था। हरी–साग और सब्जियों को देखकर उसे ऊबकाई आती थी। करेला और कद्दू देखकर उसे चक्कर आने लगता।

इस तरह से देखा जाये तो उसकी पूरी दुनिया चटपटी और मसालेदार तीखी चीजों के आसपास घूमती रहती। जिस दिन घर में पूरी– परांठे, दम–आलू बनता उसकी भूख बहुत बढ़ जाती। चीकू को वैसे तो सादे खाने से अकसर अरुचि ही रहती। लेकिन पूरियों–कचौरियों और दम आलू वाले दिन वह भोजन पर टूट पड़ता।

एक बार की बात है। चीकू के एक्जाम चल रहे थे और उन्हीं दिनों उसका जन्म दिन आ गया। चीकू अपने दोस्तों के साथ पार्टी करने अपने घर के करीब ही एक पिज्जा और बर्गर की होटल पर पहुँचा और अपने साथियों के साथ जमकर धूम–धाम से पार्टी की। पार्टी खत्म होने के बाद वह घर लौटा। लेकिन, कुछ ही देर में जब वह अपने पेपर की तैयारी करने बैठा तो उसको अचानक से पेट में थोड़ा–थोड़ा दर्द होने लगा। उसका पेट का दर्द आधी रात के बाद बहुत बढ़ गया। उसके घर के सारे लोग अचानक से परेशान होने लगे। सब लोग अन्दाज लगाने लगे कि आखिर चीकू ने आज क्या–क्या खाया है? आज के दिन भर के उसके क्रिया–कलापों पर सरसरी तौर पर ध्यान देने के बाद घर वालों को याद आया कि वह शाम को अपने जन्मदिन की पार्टी करने बाहर किसी होटल पर गया हुआ था।

चीकू के पिता ने सोचा चलकर दूकानदार से पूछा जाये। लेकिन अब तो बहुत रात हो चुकी थी।

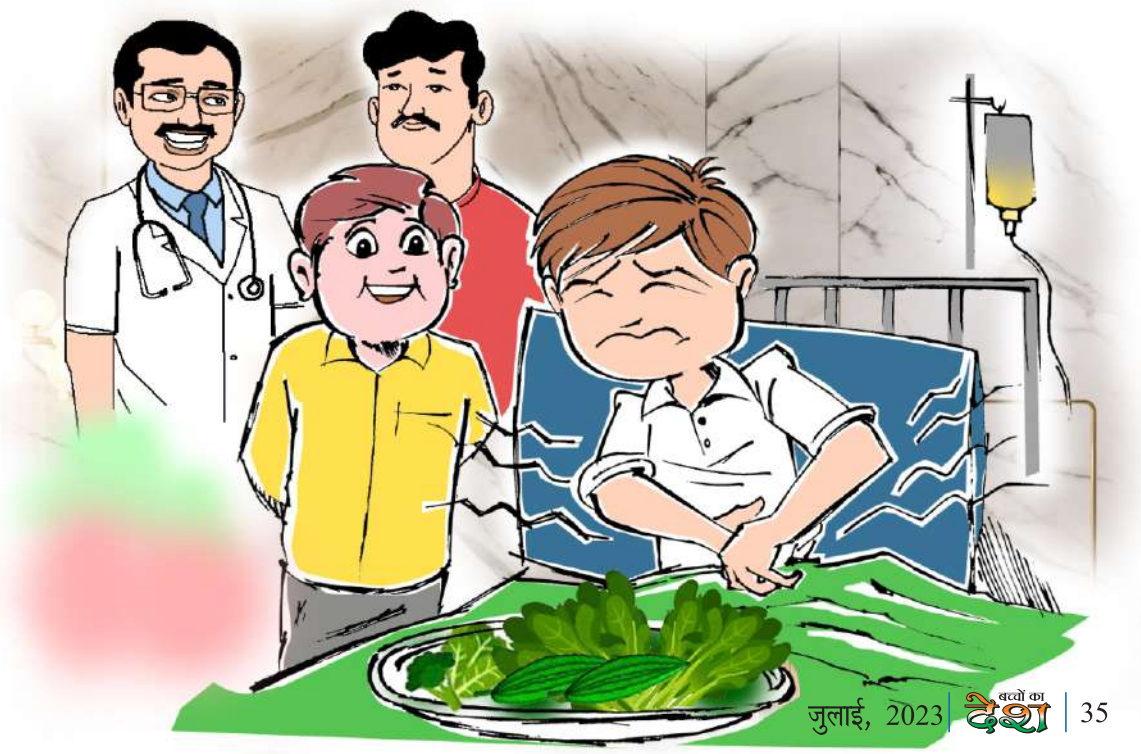

पिज्जे की होटल तो कब की बन्द हो गई होगी। इधर रात को चीकू को कई बार उल्टी और दस्त हो चुके थे। उसके मम्मी–पापा, दादा–दादी बहुत परेशान हो गये थे। उस रात उसके घर के लगभग सभी लोग जगे ही रहे। चीकू के कारण ही उसके घर के सभी लोग परेशान हो रहे थे।

खैर, रात किसी तरह बीती। सुबह उसके पिताजी उसको डॉक्टर मुकुन्द के पास लेकर गये। डॉक्टर मुकुन्द और उसके पिता राकेश कभी सहपाठी भी रहे थे। जब डॉक्टर मुकुन्द को सारी बात पता चली तो उन्होंने चीकू का इलाज बहुत ही बेहतर तरीके से किया। चीकू को उन्होंने अपने क्लीनिक में ही भर्ती कर लिया। हालत ज्यादा बिगड़ने के कारण चीकू को ग्लूकोज चढ़ाना पड़ा। दो दिनों के बाद जब उसे डॉक्टर मुकुन्द के यहाँ से छुट्टी मिली तो वह रो रहा था। डॉक्टर मुकुन्द ने चीकू से पूछा– "बेटा तुम रो क्यों रहे हो?"

चीकू अपने मन में बहुत लज्जित हुआ और बोला– "डॉक्टर अंकल! मेरे कारण घर के सभी लोग परेशान हो रहे हैं। फिर मेरा एक्जाम भी छूट गया।" चीकू लगातार रोये जा रहा था। डॉक्टर मुकुन्द ने तब चीकू के सिर पर हाथ फेरा और चीकू को समझाते हुए बोले– "कभी–कभी हम गलती से और कभी–कभी जानबूझकर भी गलत खान–पान की तरफ चले जाते हैं।

दरअसल तुम्हें फूड़–प्वॉइजनिंग हो गई थी। ऐसा तभी होता है जब हम पुराना या बासी खाना खाते हैं या खाने की चीजों को हम बहुत दिनों तक फ्रीज में रखकर खाते हैं। वास्तव में, ये सब हमारी खराब जीवन–शैली और जरूरत से ज्यादा भागदौड़ के कारण हुआ है। पश्चिम की भाग–दौड़ का प्रभाव हमारी जीवन–शैली पर पड़ने लगा है। जबकि पश्चिम की भौगोलिक, स्थिति और जलवायु अलग है और हमारे यहाँ की अलग है।

वहाँ लोग काम की अधिकता के कारण फ्रीज में रखा खाना खाते हैं। लेकिन, ये संस्कृति अब हमारे देश में भी पैर जमा रही है। हम जो खाना खाते हैं वह हमेशा ताजा होना चाहिए। लेकिन जब हम होटल या रेस्टोरेंट में खाना खाते हैं तो वहाँ कई दिनों का बासी खाना हो सकता है। इसके अलावा होटल और रेस्टोरेंट के खानों को बहुत ही स्वादिष्ट बनाने के चक्कर में मसालों का जमकर प्रयोग होता है जिससे हमारा स्वास्थ्य बहुत ही ज्यादा खराब हो जाता है। हमें हर हाल में ताजा खाना ही खाना चाहिए और रेस्टोरेंट या होटल के खाने से बचना चाहिए। खासकर जंक फूड़ जैसे– मोमोज, पिज्जा और बर्गर।"

तभी उसके पिता राकेश ने डॉक्टर मुकुन्द से, चीकू की मीठी सी शिकायत की– "अरे, यार मुकुन्द, चीकू, हरी साग–सब्जियों को हाथ भी नहीं लगाता। ये देखो इसके होंठ पर हमेशा सफेद और लाल रंग के फोड़े निकल जाते हैं।" डॉक्टर मुकुन्द ने चीकू के होंठों का मुआयना किया और चीकू को फिर से समझाया– "चीकू तुम अभी बच्चे हो। तुम्हारा अभी शारीरिक और मानसिक विकास होना बाकी है। हरी साग–सब्जियों का हमारे भोजन में बहुत महत्त्व है। हमें प्रतिदिन अपने खाने में हरी साग सब्जियों का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। हरी साग सब्जियों में विटामिन और आयरन बहुतायत में होते हैं। जिससे हमारे शरीर का शारीरिक और मानसिक विकास होता है।

इसके अलावा हमें भोजन में दालों और फलों का भी प्रचुरता में उपयोग करना चाहिए। हमें अधिक तली–भूनी चीजों से अकसर परहेज करना चाहिये। लगातार मिर्च–मसालों के सेवन से उल्टी, खट्टी डकार और अपच की शिकायत होने लगती है। शरीर के निरन्तर विकास के लिए हरी सब्जियों और फलों का नियमित उपयोग करना चाहिये।" अब चीकू को अपनी गलती का अहसास हुआ था। उसे मालूम पड़ गया था हरी सब्जियों और फलों का महत्त्व।

महेश कुमार केशरी
बोकारो (झारखंड)

A teacher teaches lesson
and then takes the exams
But life takes the exams
first and then teaches
the lessons

झूले बड़े अलबेले

बच्चे हो या बड़े, झूला झूलने का शौक सभी को होता है। जब कभी गाँव या शहरों में मेले लगते हैं, तो वहाँ तरह–तरह के छोटे–बड़े और विद्युत चालित झूले लगते हैं जिनमें झूलना बड़ा ही रोमांचकारी होता है। आपको कुछ ऐसे झूलों के बारे में बता रहे हैं जो सचमुच बड़े अलबेले हैं।

'कांसमोकलॉक–21'

जापान के याकोहामा में एक झूला है जिसे 'कांसमोकलॉक–21' के नाम से जाना जाता है, 344 फीट ऊँचा है। इसमें 60 पालने हैं और प्रत्येक में 8 सीटें हैं। इन्हें जंजीरों के माध्यम से बाँधा गया है। इसमें 480 लोगों के बैठने की व्यवस्था है। इसमें लेजर स्कीम द्वारा रोशनी की विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था तथा ध्वनि का मधुर संयोजन भी है। इस झूले में 42 फीट लम्बी विद्युत घड़ी भी लगी है।

ब्रिटिश एयरवेज लंदन आई

नयी सदी के आगमन को यादगार बनाने के लिए लंदन की टेम्स नदी के किनारे 443 फीट ऊँचा विशाल झूला लगाया गया है। यह टेम्स नदी के ऊपर क्षैतिज रूप से जोड़ा गया है। इसे छह क्रेनों और हाइड्रोलिक लिफ्ट की मदद से खड़ा किया गया है। दुनिया के इस विशाल झूले का वजन 1500 टन है। ब्रिटिश एयरवेज लंदन आई नामक धीरे–धीरे घूमने वाले इस झूले पर बैठकर लोग लंदन शहर का विहंगम नजारा देख सकते हैं। इस झूले की कल्पना वास्तुविद् डेविक मार्क और जूनिया फील्ड ने की थी। झूले को बनाने में दो करोड़ पौंड से भी अधिक की लागत आयी। धीरे–धीरे घूमने वाला यह झूला कभी रुकेगा नहीं।

मजेदार बस स्टॉप

मॉट्रिंयल के सिटी स्ट्रीट बस स्टॉप का नजारा किसी गार्डन की तरह लगता है। फर्क इतना है कि यहाँ बच्चों के साथ बड़े भी झूला झूलते नजर आते हैं। 21 बेनेलकॉइर्स नामक इस जगह पर यात्रियों के बैठने के लिए सीट की जगह झूले लगाए गए हैं। मॉट्रिंयल के डिजाइनर्स ने यहाँ के एक बस स्टॉप को यह लुक दिया है। जैसे ही कोई यात्री झूले पर बैठता है यहाँ संगीत बजने लगता है। हर झूले पर बैठने से अलग–अलग संगीत निकलता है। दुनिया के सबसे मजेदार बस स्टॉप पर इन्तजार करना यात्रियों को अखरता नहीं है।

सबसे बड़ा झूला

अमेरिकी राज्य कोलेराडो के ग्लेनवू के एडवेंचर पार्क में है सबसे बड़ा झूला। पार्क के पास 1300 फीट ऊँची पहाड़ी पर यह झूला दूर से ही नजर आ जाता है। हवा और गैस के दबाव से यह 80 किलोमीटर की गति से चलता है और 12 डिग्री के एंगल में घूमता है। इसमें एक बार में चार लोग झूल सकते हैं।

किरण बाला
मन्दसौर (मध्यप्रदेश)

भारत में वाटर स्पोर्ट्स

भारत में विशाल समुद्रीय तटरेखाओं और देश में पड़ने वाली गरमी के कारण पानी के खेलों की यहाँ असीमित सम्भावनाएँ हैं। रिवर राफ्टिंग, सर्फिंग, कयाकिंग, सेलिंग आदि कई खेल लोगो को खूब लुभाते हैं। भारत में रोमांच से भरे समुद्र के किनारे पर छुट्टियों के दौरान पानी पर साहसिक खेलों के कई विकल्प हैं।

वाटर स्पोर्ट्स

भारत में वाटर स्पोर्ट्स तेजी से लोगों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। भारत दुनिया में पानी के खेल के लिए सबसे प्रसिद्ध स्थान के रूप में उभरा है। भारत उन साहसिक खेल प्रेमियों के लिए बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराता है जो विभिन्न प्रकार के अनुभव की तलाश में हैं।

कयाकिंग और राफ्टिंग

कयाकिंग और राफ्टिंग भारत में लोकप्रिय साहसिक खेलों में से एक हैं। व्हाइट वाटर राफ्टिंग ऊँचाई वाले जल स्रोत के साथ नाव खेने का अद्‌भुत अवसर प्रदान करता है। बहता पानी, तेज गति के बहाव में सन्तुलन बनाने की चुनौतियाँ एक रोंगटे खड़े करने वाला अनुभव प्रदान करता है।

यह खेल, व्हाइट वाटर राफ्टिंग, वास्तव में भारत एक ऐसे खेल के रूप में पहचाना जा रहा है जिसमें बहुत उत्साह, नवीनता और रोमांच शामिल है। इस खेल में जोखिम उतना ही अधिक होता है जितना ज्यादा लहरें होती हैं। समय के साथ, अधिक से अधिक लोग बेमिसाल उत्साह और रोमांच के लिए इस खेल की ओर रुख कर रहे हैं।

इस खेल में भाग लेने के लिए, फिटनेस के कुछ स्तरों को पूरा करने की आवश्यकता है। आपको मानसिक और शारीरिक फिटनेस के स्तर तक पहुँचना होगा। मानसिक या हृदय रोग से पीड़ित लोगों को कभी भी राफ्टिंग में हाथ नहीं आजमाना चाहिए। गर्भवती माता और 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को यह क्रिया करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

तैराकी

तैरना भारत में एक लोकप्रिय खेल गतिविधि है। तैरने के खेल में हाथों और पैरों की मदद से शरीर को पानी में घुमाने की क्रिया शामिल होती है। तैराकी गतिविधि देश और दुनिया भर के लोगों द्वारा पसन्द की जाती हैं।

तैरना एक व्यक्तिगत या टीम रेसिंग खेल है जिसमें पानी के माध्यम से चलने के लिए अपने पूरे शरीर के उपयोग की आवश्यकता होती है। खेल पूल या खुले पानी में होता है। प्रतिस्पर्धी तैराकी सबसे लोकप्रिय ओलम्पिक खेलों में से एक है, बटरफ्लाइ, बैकस्ट्रोक, ब्रेस्टस्ट्रोक, फ्रीस्टाइल और व्यक्तिगत मेडले में विभिन्न दूरी की घटनाओं के साथ।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

बारिश का मजा

परु और शिवा दोनों भाई बहन अपने माता पिता के साथ शहर में रहते थे। परु की उम्र 12 वर्ष व शिवा की उम्र 5 वर्ष थी। आज रविवार था इसलिए बच्चों के स्कूल की छुट्टी थी। सुबह–सुबह परु ने अपनी माँ से कहा– ''माँ–माँ मुझे कोई चटपटी चीज खाने का मन कर रहा है।'' माँ ने कहा– ''बरसात का मौसम है तो क्यों न मैं तुम्हें पकोड़े बनाकर खिला दूँ? परु बोली– ''हाँ हाँ माँ, पकोड़े बनाओ।''

उसके कुछ देर बाद ही माँ के मोबाइल पर घंटी बजी। मम्मी ने फोन उठाया तो फोन परु की मौसी का था, जो उसी शहर में रहती थी। मौसी ने उसकी मम्मी को अपने घर किसी जरूरी काम से बुलाया था। फोन रखने के बाद माँ ने परु से कहा– ''बेटा मैं अभी तेरी मौसी के घर जा रही हूँ। उन्हें कुछ जरूरी काम है तुम घर पर पापा के साथ रहना। मैं जल्दी आने की कोशिश करूँगी।''

माँ शिवा को लेकर मौसी के यहाँ चली गई। माँ के जाने के बाद आसमान में काले बादल छाने लग गए। मौसम सुहाना हो गया। परु मौसम का मजा ले रही थी, फिर अचानक झमाझम बारिश शुरू हो गई। उसने अन्दर जाकर देखा तो उसके पापा को नींद आ गई थी। उसने पापा को उठाया नहीं और बाहर आ गई और बारिश का मजा लेने लगी। वैसे परु बहुत समझदार थी।

बारिश होते–होते काफी समय हो गया था। मौसम को देखकर उसे कुछ चटपटा खाने का मन हुआ और भूख भी बढ़ गई थी। वह सोच रही थी कि– ''वह क्या करें? मम्मी ने मुझे कढ़ाई चढ़ाने के लिए मना किया हुआ है। मैं क्या करूँ? भूख भी बहुत लग रही है।''

वह इसी असमंजस में थी कि फोन पर घंटी बजी। उसने फोन उठाया। सामने से उसकी सहेली अनुश्री का फोन था। अनुश्री ने पूछा– ''क्या हाल–चाल है? क्या तुम्हारा स्कूल का काम हो गया है?'' उसने कहा– ''अभी मेरा मन नहीं है कुछ बात करने का। मैं तुमसे बाद में बात करूँगी।'' अनुश्री ने पूछा– ''क्यों क्या बात है? मुझे बताओ हो सकता है मैं तुम्हारी कुछ मदद कर पाऊँ?''

परु ने कहा– ''बरसात का मौसम हो रहा है। मुझे कुछ चटपटा खाने का मन कर रहा है। माँ

जल्दबाजी में मेरे लिए कुछ नहीं बनाकर गई। पता नहीं कब तक आएगी।'' अनुश्री बोली– ''मैं तुम्हें एक आइडिया देती हूँ, क्या तुमने कभी अपने आप भेलपुरी बनाकर खाई है? सचमुच बहुत ही मजेदार लगती है। मैं तो जब भी मेरा मन करता है बनाकर खाती हूँ और सबको खिलाती भी हूँ, और तो और बनाना भी बहुत ही आसान है। वह भी घर पर कुछ चीजों से जो घर पर ही मिल जाती है आसानी से।'' परु ने पूछा– ''मगर कैसे?''

अनुश्री बोली– ''तुम देखो तुम्हारे घर में फ्रिज में उबले हुए आलू, खट्टी चटनी, मीठी चटनी और टमाटर है क्या?'' परु ने जाकर फ्रिज खोल कर देखा तो फ्रिज में सारी चीजें मौजूद थी। उसने अनुश्री से कहा– ''हाँ सच में सारी चीजें हैं।'' ''देखो क्या तुम्हारे घर में मुरमुरे भी है।'' परु बोली– ''मुरमुरे तो माँ कल ही बाजार से लाई थी।'' अनुश्री बोली– ''अब तुम अपनी जरूरत के हिसाब से मुरमुरे ले लो और उसमें उबले हुए आलू काटकर, खट्टी चटनी, मीठी चटनी, टमाटर, प्याज, और थोड़ा सा धनिया डालकर मिला लो फिर चखो कि इसका स्वाद कैसा है? याद रहे इन सब चीजों को तभी मिलाएँ जब हमें भेलपुरी बनानी हो, और अपने स्वाद के अनुसार मसाले डाल लो, जो तुम अपने स्वाद के अनुसार कम या ज्यादा डाल सकती हो। हाँ, तुम्हें मीठी चटनी अच्छी नहीं लगती तो तुम सॉस भी मिला सकती हो। अच्छा अब मैं फोन रखती हूँ।'' कहकर फोन काट दिया। परु ने भी बिलकुल अनुश्री के बताए अनुसार ही भेलपुरी बनाई। जब परु ने उसे चखा तो उसे लगा यह तो बहुत स्वादिष्ट और मजेदार है। भेलपुरी थोड़ी ज्यादा बन गई थी।

इतने में ही उसके पापा भी उठकर बाहर आ गए। देखा तो परु कुछ खा रही थी। पापा ने पूछा– ''परु, तुम क्या खा रही हो?'' तो उसने बताया– ''पापा पापा! मैंने अपनी सहेली अनुश्री के बताए अनुसार भेलपुरी बनाई है, क्या आप भी खाओगे?'' पापा ने कहा– ''बेटा अगर ज्यादा है तो थोड़ी सी मुझे भी दे दो।'' भेलपुरी तो थोड़ी ज्यादा बन ही गई थी। अब क्या था बची हुई भेलपुरी परु ने पापा को दे दी। पापा ने कहा– ''बेटा भेलपुरी तो बहुत अच्छी बनाई है, मजा आ गया।'' पापा के मुँह से अपनी तारीफ सुनकर परु फूली नहीं समा रही थी। वह मन ही मन बारिश को धन्यवाद देने लगी।

लक्ष्मी कानोडिया
खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

मेरा नाम बताओ

1. मेरे नाम में चार अक्षर है जिसके उत्तर के लिए आप गुलाब का पहला अक्षर, रजनीगंधा का दूसरा, मोगरा का तीसरा और रात रानी के दूसरे अक्षर को क्रम से जोड़े तो मेरा नाम मालूम हो जाएगा।
2. मेरे नाम में पाँच अक्षर है जिसका पहला अक्षर कोलकाता का चौथा अक्षर है, दूसरा अक्षर जयपुर का पहला अक्षर है, तीसरा अक्षर शिमला का दूसरा अक्षर है। चौथा अक्षर अहमदाबाद का दूसरा अक्षर है और अन्तिम अक्षर भोपाल का तीसरा अक्षर है। अब तो बताइए, मेरा नाम क्या है?
3. मेरे नाम में आठ अक्षर है जिसका पहला अक्षर सन्देश का अन्तिम अक्षर है। दूसरा अक्षर महीने का दूसरा अक्षर है। तीसरा अक्षर दर्पण का पहला अक्षर है। चौथा अक्षर भलाई का पहला अक्षर है और पाँचवा अक्षर सागर का मध्यम अक्षर है। छठवाँ अक्षर ताकत का तीसरा अक्षर है। सातवाँ अक्षर सिंघाड़े का पहला अक्षर है। आठवाँ अक्षर सप्ताह का अन्तिम अक्षर है।

आशा है अब तो आपको मेरा नाम ज्ञात हो गया होगा।

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. रवि सर ने मोनी की बुरी आदत को कैसे सुधारा ?
2. क्या आप सुनयना की सोच व काम से सहमत हैं?
3. बादल के चार पर्यायवाची शब्द बताओ ? (पृष्ठ–10)
4. मोलू व टीटू की बातचीत का कौन सा वाक्य शिक्षाप्रद है?
5. 'स्वच्छता का विवेक' लेख की कौन सी बात आपको अच्छी लगी ?
6. किस भारतीय व्यक्ति को 'नागरिक उड्डयन का जनक' कहा जाता है ?
8. चीकू की खाने की आदत में बदलाव कैसे हुआ?
9. किस गाँव को अफसरों का गाँव कहते हैं?
10. इस पत्रिका के किस पृष्ठ पर **old is gold** लिखा है?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(अ) प्रथम आविष्कृत मोटर गाड़ी (ब) पनडुब्बी (स) होवरक्राफ्ट (द) ट्रेलर ट्रक (2) NH-44 (3) तीसरा स्थान (4) मुम्बई (5) वर्ष 2000 (6) महाराष्ट्र (7) स्वर्णिम चतुर्भुज (8) जलमार्ग परिवहन (9) National Highway Authority of India भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (10) कोलकाता

अन्तर ढूँढ़िए

(1) इन्द्रधनुष का एक रंग अलग (2) घास पर बैठे बच्चे का आकार बड़ा (3) आकाश में एक चिड़िया गायब (4) रेलिंग में एक पट्टी का रंग अलग (5) आकाश में एक पतंग अतिरिक्त (6) आकाश में बादल गायब (7) महिला की पोशाक में एक जेब अतिरिक्त (8) लड़के की हॉफ पेन्ट एक पैर में बड़ी

दिमागी कसरत

(1) गुजरात (2) ताजमहल (3) शहीद भगत सिंह

बताओ तो जानें

(1) पृथ्वी (2) बादल (3) कुआँ (4) मनुष्य का मुँह (5) रजाई

मेरे विद्यालय का स्वतन्त्रता दिवस

इस विषय पर आपको अपने विद्यालय के स्वतन्त्रता दिवस आयोजन से सम्बन्धित कोई विशेषता या घटना हमें 20 वाक्यों में 12 जुलाई तक लिखकर भेजें। भाषा हिन्दी या अँग्रेजी हो सकती है।

वर्ग पहेली

1 आ	2 मो	3 द	प्र	4 मो	5 द		6 च
7 क	द	म		8 ह	म	द	म
9 ल	क	ड़ी		ग्र		10 या	क
न			11 द	स्त	12 क		दा
	13 मु	14 ख	र		15 स	16 फ	र
17 सं	स्का	र		18 ग	र	ल	
19 ग	न		20 रा	ह	त		21 क
त		22 स	ज	ना		23 से	म

सुडोकू

4	3	9	2	6	8	7	1	5
6	7	8	4	5	1	2	3	9
1	5	2	9	3	7	8	4	6
7	9	4	3	1	2	6	5	8
8	1	5	6	4	9	3	7	2
3	2	6	8	7	5	1	9	4
5	8	3	7	9	6	4	2	1
2	4	1	5	8	3	9	6	7
9	6	7	1	2	4	5	8	3

रेहा, कक्षा 1, बीकानेर

गर्विश जैन, कक्षा 7, भींडर

भुवि जैन, नई दिल्ली

अक्षय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 9, थाने (महाराष्ट्र)

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

बरसात

बरसात यहाँ जब भी आती।
हमें मजा ये खूब दिलाती।।

गड़–गड़ करके बादल आते।
टप–टप कर पानी बरसाते।।

छम–छम पानी में नाचूँगी।
पानी में खूब नहाऊँगी।।

कागज की सब नाव बनाते।
उसे हम पानी में बहाते।।

पकौड़ी मम्मी ने बनाई।
साथ में गर्म चाय पिलाई ।।

पाखी जैन
कक्षा 6, उदयपुर

थामे प्रकृति की डोर, बढ़े कल की ओर

तुलसी, भावना

कचरा

यहाँ है फैला
ये कचरा मैला
सड़क किनारे
नदी किनारे
बीच समंदर
घर के अंदर
नील गगन में
उड़ा पवन में
जहाँ भी देखो
राज इसी का
हर पल बढ़ता
नहीं है घटता
निगल गया है
धरती की हरियाली
बर्फ सुहानी
मधुर पवन भी
उजली किरण भी
आओ मिलकर इसे मिटायें,
प्रकृति को बचायें।।

–चंद्रकांता वर्मा

काजल

खुशबू

राधा

मधु

सेवना

कांता, वर्षा

: सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- आबू रोड़, सिरोही

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

जंक फूड से बचना क्यों जरूरी ?

बच्चों में ज्यादा फास्ट फूड की आदत से लेड (सीसा) उनके रक्त में धीरे-धीरे घुलता जा रहा है। यह लेड रक्त के जरिए दिमाग तक पहुँचकर न्यूरोंस को प्रभावित कर रहा है। सीसा पाँच साल तक के बच्चों में मेंटल इंटेलेक्चुअल डिसएबिलिटी यानी लोअर आईक्यू सम्बन्धी समस्या पैदा कर रहा है। ऐसे बच्चों को गणित समझ में नहीं आती। बच्चों के बोलने में देरी, देरी से शारीरिक विकास, ऑटिज्म, जैसे प्रभाव दिखाई देते हैं।

मुम्बई में समुद्र पर बना देश का सबसे बड़ा पुल

मुम्बई में ट्रांस हार्बर लिंक परियोजना के तहत समुद्र की लहरों को चीर कर देश का सबसे बड़ा पुल बनाया गया है। यह प्रोजेक्ट 600 इंजीनियरों की मेधा का कमाल है। 22 किलोमीटर लम्बे 6 लेन के पुल पर 17843 करोड़ रुपये खर्च हुए। इस पुल के निर्माण में 1.70 लाख मीट्रिक टन स्टील बार का उपयोग किया गया है। 48 हजार किलोमीटर लम्बे प्रीस्ट्रेसिंग तार व 9.75 लाख क्यूबिक मीटर कंक्रीट लगा है। यह पुल मुम्बई और नवी मुम्बई, मुम्बई-पुणे एक्सप्रेस वे, मुम्बई-गोवा नेशनल हाईवे से भी जुड़ेगा।

नदी पर सबसे ऊँचा रेलवे पुल

जम्मू कश्मीर में महत्त्वाकांक्षी उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना पर बक्कल और कौडी रेलवे स्टेशन को मिलाने वाले चिनाब नदी पर बन रहे विश्व के सबसे ऊँचे रेलवे पुल पर ट्रेन को दौड़ाने से पहले मोटर ट्रॉली चलाने का सफल परीक्षण किया गया। रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने रियासी के बक्कल पहुँचकर इस रेल परियोजना का जायजा लिया। यह पुल नदी तल से 359 मीटर ऊपर है।

स्पेलिंग बी प्रतियोगिता में देव बना विजेता

अमरीका में मैरीलैंड के नेशनल हार्बर में आयोजित नेशनल स्पेलिंग बी 2023 प्रतियोगिता के फाइनल में भारतीय मूल के देव शाह ने ट्रॉफी और 50 हजार डॉलर (करीब 41. 20 लाख रुपए) का पुरस्कार जीता। इस प्रतियोगिता में न सिर्फ वर्तनी लिखने की परीक्षा होती है, बल्कि शब्दों की उत्पत्ति, उनकी संरचना और उपयोग के ज्ञान का भी परीक्षण किया जाता है। देव लागो में आठवीं कक्षा का छात्र है।

ऑटिज्म पीड़ित को मास्टर डिग्री में दाखिला

मैक्सिको सिटी की अधारा पेरेज सांचेज (11 साल) 'ऑटिज्म' (स्वलीनता) से पीड़ित है। ऐसे बच्चों के लिए पढ़ना-लिखना और सीखना मुश्किल होता है, लेकिन अधारा ने इतनी कम उम्र में एक यूनिवर्सिटी की इंजीनियरिंग शाखा में मास्टर डिग्री के लिए दाखिला लिया है। अधारा का आइक्यू 162 है। अधारा की माँ नावेली के मुताबिक उनकी बेटी बहुत तेजी से सीखती है। उसे हर चीज याद रहती है। उसने पूरी आवर्त सारणी कुछ दिन में याद कर ली और बीजगणित अपने आप सीख गई।

शादी में वर-वधू को गिफ्ट में दी 400 किताबें

तमिलनाडु में कोयंबटूर के ग्रीन एक्टिविस्ट जवाहर सुब्रमण्यम ने अपनी बेटी की शादी के रिसेप्शन को आदिवासी छात्रों की मदद करने के अवसर में बदल दिया। दरअसल जवाहर की बेटी एसवी स्वर्ण प्रभा और एम के तिरुविक्रम को बधाई देने आए मेहमान उपहार के रूप में किताबें लेकर आए।

पौधारोपण

बरसात के दिन थे। एक दिन मेरे पिताजी ने हम पाँचों भाइयों को बुलाया और पाँचों भाइयों से एक–एक गड्ढा खुदवाया और सभी भाइयों को एक–एक पौधा थमा कर कहा कि इन्हें सही ढंग से रोपें। ये पौधे केले, अनार, अमरूद, गूंदे व सीताफल की नई किस्मों के थे।

पिताजी अब रोज हम से इन पौधों में पानी डलवाते। कभी खुरपी से खुदाई करने को कहते। कभी खाद डलवाते लेकिन पौधों के पास साफ–सफाई रोज कराते। इससे घर के परिसर में हर वक्त साफ सफाई रहती। धीरे–धीरे पौधे बड़े होने लगे। नियमित रूप से देखरेख करने से हरे–भरे पौधों के कारण आँगन एक पार्क जैसा लगने लगा।

साल भर बाद उन पौधों ने वृक्ष का रूप ले लिया और फल लगने लगें। हमें पता भी नहीं लगा कि कब समय पंख लगाकर निकल गया और हमें अभी तक यह भी पता नहीं था कि पिताजी ने हम से ये पौधे क्यों लगवाएँ?

एक दिन पिताजी ने हमें बताया कि ये पौधे आप भाइयों ने एक साल पहले आज ही के दिन लगाये थे और आज ये वृक्ष बनकर तुम्हारे सामने खड़े हैं और फलों से लदे हुए हैं। यह सब आप लोगों की मेहनत का ही परिणाम है। इतना ही नहीं, आज हमारा यह परिसर हरियाली के कारण व साफ सफाई के कारण कितना सुन्दर लगता है!

आप आज अपनी मेहनत का परिणाम देख रहे हो कि ये पेड़ कितने हरे भरे हैं और फलों से लदे हैं। पिताजी ने ये पंक्तियाँ करीब चार–पाँच बार दोहराई तब जाकर हमें यह समझ में आया कि उनका इशारा इस ओर था कि जैसे बगीचे को हरा–भरा बनाएँ रखा, वैसे ही इस परिवार को संयुक्त परिवार बनाएँ रखना और इस बात का विशेष ध्यान रखना कि इसकी एक भी डाल टूट न पायें। हमारे पिताजी आज भले ही इस नश्वर संसार में नहीं है लेकिन हमें संयुक्त परिवार की महत्त्वपूर्ण सीख पौधारोपण के बहाने दे गये।

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर (राजस्थान)

देवहंस

असम का राज्य पक्षी
हिन्दी नाम - देवहंस (सफेद पंख वाली बतख)
अँग्रेजी नाम - White & winged Wood Duck
वैज्ञानिक नाम - Asarcorinis scutulata

असम का 'राज्य पक्षी'

यह बड़ी प्रजाति की जंगली बतखों में से एक है। इसकी लम्बाई 66–81 सेन्टीमीटर और पंखों का फैलाव 116–153 सेन्टीमीटर है। यह नदियों, झीलों, नहरों, छोटे–छोटे तालाबों व जल कुंडों के पास मिलती है। इसे जंगल में तालाबों के आसपास वनस्पति वाले क्षेत्रों, बाँस के घने जंगलों में दलदली भागों में देखा जा सकता है। भारत में यह केवल पूर्वी असम और आस–पास के अरुणाचल प्रदेश के मुख्य क्षेत्रों के साथ ही देश के पूर्वोत्तर भाग में पाई जाती है। बतखों की यह प्रजाति रात के समय भोजन करने के लिए जानी जाती है। इसके नर का सिर और गर्दन मटमैले रंग की होती है जिस पर छोटी–छोटी काली बिन्दियाँ होती हैं। शरीर का शेष भाग हरापन लिए हुए काला–कत्थई होता है। इसके आहार में बीज, जलीय पौधे, अनाज, चावल, घोंघे, छोटी मछलियाँ और कीड़े होते हैं।

डॉ. कैलाश चन्द सैनी
जयपुर (राजस्थान)

दूसरा

चित्रकथा-

संकेत गोस्वामी, जयपुर (राज.)

– वेणु वरियाथ

Body parts

Match each body part with the boy by drawing lines.

What we do?

Tick ✓ what we do?

in the morning

in the school

in the park

at night

Join the dots

Join the dots A to Q and find a friend.

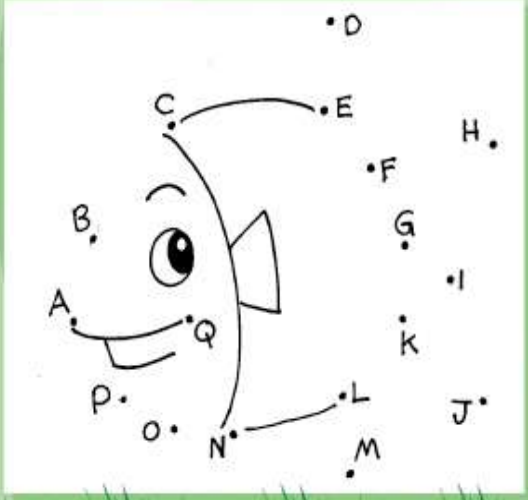

Write and Practise

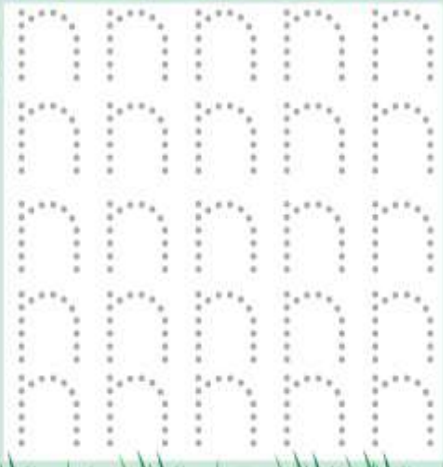

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत आंदोलन
75
15 राज्य
200 शहर
1 लाख बच्चे
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान
ANUVRAT CREATIVITY CONTEST 2023
मुख्य विषय : असली आजादी अपनाओ
प्रतियोगिताएं
लेखन
चित्रकला
गायन
भाषण
कविता
राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार
शीघ्र आ रहा है...
सम्पर्क करें :
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
head.office@anuvibha.org +91 91166 34515, delhi@anuvibha.org +91 91166 34512
jeevan.vigyan@anuvibha.org +91 91166 34514
राष्ट्रीय संयोजक - श्री राजेश चावत 91106 13732

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

गुलजारीलाल नंदा

जन्म : 04 जुलाई, 1898 ■ निधन : 05 जनवरी, 1998

आप भारतीय राजनीति के स्तंभ, स्वतन्त्रता सेनानी, अर्थशास्त्री और श्रमिक मुद्दों के विशेषज्ञ थे। आप दो बार 13-दिन के लिए भारत के अंतरिम प्रधान मन्त्री बने। उन्हें 1997 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। आपको सादगी पसन्द, चरित्रवान और सिद्धान्तवादी राजनेता माना जाता है। आपने ब्रिटिश राज के खिलाफ सहयोग आंदोलन में भाग लिया और अनेक बार जेल गए। आपको केन्द्रीय मन्त्री और योजना आयोग के उपाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक